जुलाई 2019

दादावाणी

Retail Price ₹ 15

नासमझी की भूलें

खेतों में की चोरियाँ

रूठ जाना

छेड़खानी

व्यापार में हुई चोरी

'बचपन से लेकर आज तक जो कुछ भी हुआ है, उसमें से जितना आपको दिखाई दे, उन सब के प्रतिक्रमण करना। वह प्रतिक्रमण आज्ञासहित है इससे सब धुल जाएगा।

वर्ष : 14 अंक : 9
अखंड क्रमांक : 165
जुलाई 2019
पृष्ठ - 28

Editor : Dimple Mehta
© 2019
Dada Bhagwan Foundation.
All Rights Reserved
Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj
Dist-Gandhinagar - 382421

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj
Dist-Gandhinagar - 382421

Printed at
Amba Offset
B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar – 382025.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj
Dist-Gandhinagar - 382421

संपर्क सूत्र :
त्रिमंदिर, सीमंधरसिटी,
अहमदावाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ.: **अडालज**,
जि.: गांधीनगर-382421.
फोन: (079) 39830100
email: dadavani@dadabhagwan.org
www.dadabhagwan.org
दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:
+91 8155007500

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)
15 साल
भारत : 1500 रुपये
यू.एस.ए. : 150 डॉलर
यू.के. : 120 पाउन्ड
वार्षिक
भारत : 150 रुपये
यू.एस.ए. : 15 डॉलर
यू.के. : 12 पाउन्ड
भारत में D.D./M.O.
'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम से
संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

दादावाणी

दादा करते हैं खुद की भूलों को 'ओपन टू स्काई'

संपादकीय

प्रत्येक मानव अपने जीवन काल में कभी न कभी नासमझी की वजह से या संयोगों के दबाव में आकर ऐसी स्थिति में फँस जाता है जिससे कि संसार व्यवहार में उसे भूल नहीं करनी हों फिर भी भूलें हो जाती हैं और भूलों में से मुक्त नहीं हो पाता। ऐसी परिस्थिति में सच्चे दिल वाले पुरुषों को लगातार उलझन का अनुभव होता है। ऐसे संयोगों में उन्हें भूल को खत्म करके जीवन जीने की सही राह मिले, उसके लिए तीर्थंकरों व ज्ञानियों ने संसार को आलोचना-प्रतिक्रमण व प्रत्याख्यान रूपी सटीक हथियार दिया है।

इस संकलन में दादाश्री ने उनके अपने ही शब्दों में अपनी भूलों को ओपन टू स्काई किया है। वे कहते थे कि, 'ज्ञान होने से पहले नासमझी में हमसे जो भूलें हुई, उनमें, हमारे उदय में चोरियाँ आई थीं। खेतों में आम, बेर, कैथ, सौंफ की चोरी, फिर अँगूठी की चोरी। नासमझी में हुई चोरी लेकिन बाद में इसके लिए खूब पछतावे किए तब जाकर साफ हुआ।' उसी तरह ज्ञान होने से पहले दादाश्री की बुद्धि बहुत तेज़ थी इसलिए उसका दुरुपयोग छेड़खानी और मज़ाक उड़ाने में किया। जिससे कि दूसरों को दुःख दे दिया था। इसके अलावा उनकी बुद्धि शरारती थी। परेशान करते थे, शरारत करते थे, मस्ती करते थे और वे लोगों को छेड़ते थे। साथ ही, बचपन में बीड़ी, सिगरेट और ताश खेलने के कुसंग भी उदय में आए थे।

इन घटनाओं को पढ़ने के बाद इतना समझ में आता है कि दादाश्री का जीवन भी एक सामान्य व्यक्ति जैसा ही था, लेकिन उनकी समझ असामान्य व्यक्ति जैसी थी। परम पूज्य दादाश्री ने किस प्रकार ज्ञान से पहले और ज्ञान के बाद हुई अपनी स्थूल, सूक्ष्म, सूक्ष्मतर और सूक्ष्मतम भूलों को पहचानकर उनके प्रतिक्रमण किए, वे सारी बातें यहाँ पर संकलित हुई हैं। उनके द्वारा किए गए प्रतिक्रमण का मर्म समझ में आए इसलिए इस वर्ष हम प्रतिक्रमण विषय पर लगातार तीन दादावाणियों का गहराई से अभ्यास करेंगे ताकि हमें भी प्रतिक्रमण करने की सही दृष्टि मिले।

जुलाई - 19 दादा करते हैं खुद की भूलों को 'ओपन टू स्काई'
अगस्त - 19 दादा खोलते हैं खुद की 'भूल पोथी'
सितम्बर -19 अहो! अहो! वे जागृत दादा!

प्रस्तुत अंक में दादाश्री, महात्माओं को सही बात समझाते हुए कहते हैं 'ऐसा कब कहेंगे कि महावीर भगवान के मार्ग को प्राप्त किया? तब, जब रोज़ खुद के सौ-सौ दोष दिखाई दें, रोज़ सौ-सौ प्रतिक्रमण हों।' जिस प्रकार दादाश्री ने खुद से हुई भूलों को प्रतिक्रमण से साफ किया, उसी तरह से उनके जीवन पर से सीखकर हम भी अपनी भूलों को पहचानकर, उन भूलों के लिए शुद्ध हृदय से प्रतिक्रमण व प्रत्याख्यान करके उन भूलों से मुक्त होकर, मोक्ष मार्ग में पुरुषार्थ करें, यही अभ्यर्थना।

- जय सच्चिदानंद

पाठकों से...

'दादावाणी' सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलत: गुजराती 'दादावाणी' का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेज़ी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश है। यहाँ पर 'आत्मा' शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी 'चंदूभाई' नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। 'दादावाणी' के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें, ताकि भविष्य में सुधार किया जा सकें। ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी है।

दादा करते हैं खुद की भूलों को 'ओपन टू स्काई'

'सॉफ्टवेयर', प्रतिक्रमण का

यह अपूर्व बात है, पहले कभी सुनी न हों, पढ़ी न हों, जानी न हों, यह मेहनत वैसी बातें जानने के लिए है।

हम जब यहाँ पर प्रतिक्रमण करवाने के लिए बैठाते हैं, तब फिर क्या होता है? दो घंटे तक प्रतिक्रमण करवाते हैं न, 'बचपन से लेकर अभी तक जो कुछ दोष हुए हैं, उन सब को याद करके प्रतिक्रमण कर लो, सामने वाले के शुद्धात्मा को देखकर।' अब बचपन से, जब से समझने की शुरुआत होती है, तब के प्रतिक्रमण करने लगता है, तो अभी तक के प्रतिक्रमण करता है। ऐसे प्रतिक्रमण करता है कि उसके दोषों के बड़े-बड़े भाग उसमें आ जाते हैं। बाद में वापस प्रतिक्रमण करने पर उनसे भी छोटे-छोटे दोष आ जाते हैं। वापस फिर से प्रतिक्रमण करने पर उनसे भी छोटे-छोटे दोष आ जाते हैं, इस तरह उन दोषों को पूरी तरह खत्म कर देता है।

दो घंटे के प्रतिक्रमण में पूरी ज़िंदगी के पिछले सारे चिपके हुए दोषों को धो देना है और ऐसा निश्चय करना है कि 'फिर कभी भी ऐसे दोष नहीं करूँगा,' तो प्रत्याख्यान हो गया।

आप जब प्रतिक्रमण करने बैठते हो न, तब एक तरफ अमृत की बूंदें टपकती रहती हैं और आप हल्के होते जाते हो। भाई! क्या तुझ से प्रतिक्रमण होते हैं? हल्के हुए ऐसा लगता है? आपने प्रतिक्रमण शुरू कर दिए हैं बहुत? ज़ोरदार चल रहे हैं? खोज-खोजकर सारे प्रतिक्रमण कर देने हैं। जाँच करने लगो। वह सब याद भी आता जाएगा। रास्ता भी दिखाई देगा। आठ साल की उम्र में किसी को लात मारी होगी तो वह भी दिखाई देगा। वह रास्ता दिखाई देगा, लात भी दिखाई देगी। याद कैसे आया यह सब? यों याद करने जाएँ तो कुछ याद नहीं आता और प्रतिक्रमण करने बैठें तो तुरंत लिंकबद्ध (क्रमबद्ध) याद आ जाता है।

देखने से धुल जाते हैं दोष

सन् 1958 में ज्ञान हुआ न, उसके बाद, कुछ दोष तो भीतर भरे हुए थे न! वे सारे दोष दिखाई देने लगे। रोज़ के तीन-तीन हज़ार दोष दिखाई देते थे। बाद में सभी चले गए। फिर दिखाई देते गए और सभी चले गए।

पहले जहाँ राग-द्वेष हुए हैं, उनके लिए प्रतिक्रमण करने पड़ेंगे न? और उन्हें साफ करने से जो आनंद आता है, उस जैसा अन्य कोई आनंद ही नहीं है। जो हो गए हैं, वे तो अज्ञानता में हो गए, लेकिन अब ज्ञान मिलने के बाद भी हम उन्हें न धोएँ और उन कपड़ों को पेटी में ही रखे रखें तो? यहाँ इतना बाकी रह गया है, उनके प्रतिक्रमण करते रहना। हाँ, वर्ना मन को क्या काम देंगे? ये प्रतिक्रमण करता रहेगा।

ज्ञान लेने से पहले जो दोष हो चुके हैं, देखने पर वे सब दोष धुल जाएँगे। यदि अब भी देखेंगे तो धुल जाएँगे। अगर याद करने जाएँ तो एक भी याद नहीं आएगा लेकिन इस ज्ञान से सब दिखाई देते हैं। आत्मा हाज़िर हो जाएगा और सब दिखाई देगा। ठेठ तक का, पूरी लाइफ का दिखाई देगा।

दिखाई दिए सारे तूफान बचपन के

हमें ठेठ तक का, बचपन तक का, सब दिखता ही रहता है। सभी पर्याय दिखाई देते हैं। ऐसा था... ऐसा था, फिर ऐसा था। स्कूल में हम, घंटी बजने के बाद जाते थे, वह सबकुछ हमें दिखाई देता है। मास्टर साहब चिढ़ते रहते थे, कुछ कह नहीं पाते थे और चिढ़ते रहते थे

प्रश्नकर्ता : आप घंटी बजने के बाद क्यों जाते थे?

दादाश्री : ऐसा रौब था! मन में ऐसी खुमारी! लेकिन सीधे नहीं रहे तभी यह दशा हुई न! सीधा इंसान तो घंटी बजने से पहले ही जाकर बैठ जाता है।

प्रश्नकर्ता : रौब मारना तो उल्टा रास्ता कहलाता है?

दादाश्री : वह तो उल्टा रास्ता ही है न! घंटी बजने के बाद भाई आते थे, मास्टर साहब पहले ही आ चुके होते थे! मास्टर साहब देर से आएँ तो चलता है लेकिन विद्यार्थी को तो नियम से, घंटी बजने से पहले पहुँच जाना चाहिए न! लेकिन ऐसी *आड़ाई* (अहंकार का टेढ़ापन)! सोचता था, 'मास्टर साहब अपने मन में क्या समझते हैं?' ले! अरे! तुझे पढ़ने जाना है या लड़ाई का मोर्चा लगाना *(बाखड़ी बाँधना)* है? तब कहता है, 'नहीं, पहले मोर्चा लगाना है।' लड़ाई का मोर्चा लगाना कहते हैं इसे। आपने '*बाखड़ी*' शब्द सुना है? आपने भी सुना है? तब ठीक है।

प्रश्नकर्ता : तो मास्टर साहब आपको कुछ कहते नहीं थे?

दादाश्री : कहते तो थे, लेकिन ज़्यादा कुछ नहीं कह पाते थे। उन्हें डर लगता था कि बाहर जाकर पत्थर मारेगा, सिर फोड़ देगा।

प्रश्नकर्ता : दादा, क्या आप इतने शरारती थे?

दादाश्री : हाँ, शरारती थे। सारा माल ही शरारती था, टेढ़ा माल।

'मैं' भी यों रूठ गया था

मैं तो बचपन में थोड़ा-बहुत रूठ जाता था, थोड़ा-बहुत। शायद ही रूठा होऊँगा। ज़्यादा नहीं रूठता था। फिर भी मैंने हिसाब निकाल कर देखा था कि रूठने में बिल्कुल ही नुकसान है। वह व्यापार ही बिल्कुल नुकसान वाला है। इसलिए फिर ऐसा तय ही कर दिया कि 'कभी भी रूठूँगा नहीं।' कोई हमें कुछ भी करे फिर भी रूठना नहीं है क्योंकि वह बहुत नुकसानदायक चीज़ है।

अत: मैंने तो बचपन से ही रूठना छोड़ दिया था। मुझे लगा कि इसमें तो बहुत बड़ा नुकसान है। मैं रूठा ज़रूर था, उसके बाद मैंने तो, दिन भर में क्या-क्या खोया, उसका हिसाब निकाला, शाम को फिर, वापस जैसे थे वैसे के वैसे। मनाने पर तो बल्कि नुकसान हुआ, वह मैंने ढूँढ निकाला। फिर मुझे मनाया था रौब से मान देकर! लेकिन सुबह का सारा दूध भी गया न! यानी बचपन में एक-दो बार रूठकर देख लिया लेकिन उससे नुकसान हुआ था, इसलिए तब से फिर मैंने रूठना छोड़ दिया। इससे नुकसान होता है या नहीं होता?

प्रश्नकर्ता : होता है।

दादाश्री : अब तो हम आत्मा हुए। अब हमें ऐसा नहीं होना चाहिए। आप कभी रूठे थे क्या? नहीं? कोई रूठता है क्या घर में?

प्रश्नकर्ता : नहीं।

दादाश्री : तब ठीक है।

प्रश्नकर्ता : आपने कहा न कि 'हमारा दूध गया, रूठे थे इसलिए।' वह किस उम्र में?

दादाश्री : वह नौ-दस साल की उम्र में।

प्रश्नकर्ता : लेकिन दादा, नौ-दस साल की उम्र में हमने भी इसी तरह दूध खोया था। हमें भी नुकसान हुआ था खाने का। अत: ऐसा तो लगा था कि यह नुकसान हुआ है फिर भी हमने वैसा जारी ही रखा लेकिन आपने कैसे बंद कर दिया?

दादाश्री : मैंने तो सुबह का दूध और वह सब खोया, तब मैंने हिसाब निकाला था कि 'मैं रूठा इसलिए इतना नुकसान हुआ! अत: रूठना बिल्कुल नुकसानदेह है इसलिए यह सब बंद कर देना है। टेढ़ा होना ही नहीं है।'

अब यह *आड़ाई* ही कहलाएगी न! हम हठ करें कि 'मुझे इतना कम दूध क्यों?' 'अरे जाने दे न, पी ले न।' अगली बार देंगे। बा से मैं क्या कहता था? 'बा आप मुझे और भाभी को एक समान मानते हो? भाभी को आधा सेर दूध और मुझे भी आधा सेर दूध देते हो? उन्हें कम दो।' मेरा आधा सेर रहने देना था। मुझे बढ़ाना नहीं था लेकिन भाभी का कम करो। डेढ़ पाव करो। तब बा ने मुझ से क्या कहा था? 'तेरी माँ तो यहीं पर है लेकिन उसकी माँ यहाँ पर नहीं है न! उसे बुरा लगेगा बेचारी को। उसे दु:ख होगा इसलिए एक सरीखा देना पड़ता है।' फिर भी मुझे स्वीकार नहीं हुआ लेकिन बा मुझे समझाते रहते थे, पैबंद लगाते रहते थे। यानी एक बार आड़ापन किया तो फिर नुकसान हो गया। तब मैंने कहा कि अब फिर से आड़ापन नहीं करना है। नहीं तो तब सभी कहेंगे, 'रहने दो फिर इसे!' तब फिर ऐसा ही होगा न!

चोरी के किए पश्चाताप व खेद

प्रश्नकर्ता : दादा आपने ऐसी कुछ गलतियाँ की थीं कि जिन पर खूब पछतावा हुआ हो?

दादाश्री : मैं ग्यारह साल का था, तब एक लड़के के घर पर आम थे। तो उसके पिता जी को पता न चले, उस तरह वह दूसरी मंज़िल से फेंकता था और मैं पकड़ लेता था। वह सब अभी भी मुझे दिखाई देता है। वह क्या कहता था कि 'आप पकड़ना, मैं फेंकूँगा फिर ये आम हम बगीचे में ले जाकर खाएँगे'। मैं उसके घर के बाहर खड़ा था तब उसने फेंके। वह रोज़ ऐसा करता था, जब माँ-बाप नहीं होते थे तब। वह सब हमें दिखाई देता है।

फिर बचपन में सभी बच्चे आम खाने जाते थे, तो उनके साथ-साथ हम भी बगिया में आम खाने जाते थे। तो एक लड़के पर दूसरा लड़का खड़ा रहता था और आम तोड़ता था। कई बार तो ज़रा-सी दूरी की वजह से हाथ नहीं पहुँच पाता था, तब वे डरते थे कूदने से तो फिर पीछे से उसे ज़रा जोश दिलाते थे कि 'कूद, आम चाहिए तो कूद, नहीं तो उतर जा'। उसे हिम्मत देते थे तो फिर वह कूदकर आम तोड़ भी लेता था!

अब पेड़ किसी और का और आम हम लें तो चोरी नहीं कहलाएगी? किसी और के पेड़ के आम खाएँ तो वह चोरी ही कहलाएगी न! फिर भी, मैं वहाँ खेत पर आम खाता था लेकिन कभी भी घर पर नहीं ले जाता था। मैं खाता ज़रूर था लेकिन घर पर नहीं ले जाता था। चरित्र अच्छा था, इतना जानता हूँ। मेरी भूमिका में चरित्र उच्च प्रकार का था, फिर भी चोरियाँ की हैं।

प्रश्नकर्ता : आम के अलावा और क्या खाते थे चुराकर?

दादाश्री : बचपन में हम चोरी करने के लिए खेत में जाते थे। खेत में बेर, कैथ, सौंफ वगैरह

उगते थे न तब लड़कों के साथ जाकर चोरी करके लाते थे।

सब लड़के जाते थे तो उनके साथ जाकर मालिक को बिना बताए कच्ची-पक्की सौंफ तोड़कर खाते थे।

प्रश्नकर्ता : उसका तो नुकसान हुआ न!

दादाश्री : ज़बरदस्त नुकसान! कहे बिना उस बेचारे की तो सौंफ तोड़ दी न! तो बाद में उसके लिए कितने ही पछतावे किए, तब जाकर साफ हुआ। तो बड़े होकर पछतावा करें उसके बजाय तो बचपन में ही साफ हो जाए तो क्या बुरा है?

भरे हुए मोह ने करवाई अँगूठी की चोरी

प्रश्नकर्ता : दादा, आपने वह बताया था न, अँगूठी का! तो वह क्या था?

दादाश्री : वह तो, एक अँगूठी चोरी कर ली थी। वह अभी भी खटकता रहता है अंदर।

मैंने अँगूठी चोरी की तो वह किस तरह से चोरी की थी, आपको तो पता नहीं है वह। लेकिन *काठी* मालूम है, क*रांठियाँ*? लकड़ियाँ, जलाने की *कांठियाँ, करांठियाँ* आती हैं। अरहर की क*रांठी* आती है, आपने देखी है? क*रांठी* कहते हैं। तो उस क*रांठी* के गट्ठर थे। तो एक आदमी से गट्ठर खरीदे थे, तो मैं उनके यहाँ लेने गया था। मैं एक मज़दूर को लेकर बताने गया था। पिता जी के कहे अनुसार गट्ठर गिनने के लिए साथ लेकर गया था।

वह आदमी ऊपर से फेंक रहा था और मैं गिन रहा था। मैं गिन रहा था और जिस नौकर को साथ ले गया था वह बाँधकर ले जा रहा था तो फिर जब वह गट्ठर फेंक रहा था तब, उसकी उँगली में से अँगूठी खिसक गई। अब वह मुझे नहीं पता था कि उसकी अँगूठी खिसक गई है। अब, ऐसा हुआ था या क्या लेकिन गट्ठर डालते वक्त अँगूठी नीचे गिर गई। अब उसकी खिसकी हुई अँगूठी गिर गई या फिर पहले से किसी की पड़ी हुई थी लेकिन एक अँगूठी नीचे गिरी।

तो हमारा जो आदमी गट्ठर लेने आया था न, उसे मैंने उल्टी तरफ भेज दिया। मैंने उस नौकर से कहा, 'तू वे गट्ठर गिन ले। उन गट्ठरों को बाँधने लग,' तब तक मैंने उस पर (अँगूठी पर) पैर रख दिया।

प्रश्नकर्ता : कितनी उम्र थी तब आपकी?

दादाश्री : तेरह साल का था, उस समय अक्ल कहाँ से आती? क्षत्रिय पुत्र था फिर भी चोरी की दानत कहाँ से आ गई? लेकिन भरा हुआ माल! मोह, भरा हुआ मोह! इसीलिए फिर मैंने उस अँगूठी पर इस तरह से पैर रख दिया ताकि वह देख न सके। फिर वह नौकर गट्ठर बाँधकर घर गया और मैंने धीरे से अँगूठी अपनी जेब में रख ली।

'गिरी और मिली', मैंने कहाँ की चोरी?

यह जो अँगूठी ली वह तो बहुत खराब संस्कार, ऐसा शोभा नहीं देता। बचपन में मैंने मान देखा है उस आधार पर यह शोभा नहीं देता। दो साल का था तब से लेकर अठारह साल तक मैंने मान देखा है। उस हिसाब से क्या यह शोभा देगा? जहाँ जाऊँ वहाँ पर मान, जहाँ जाऊँ वहाँ पर मान। अपमान तो देखा ही नहीं था। उस हिसाब से यह शोभा नहीं देता।

यों सीधे चोरी नहीं करते थे। यों तो खानदानी घर के बेटे थे इसीलिए चोरी नहीं करते थे, कोई चीज़ उठा नहीं लेते थे क्योंकि वह तो हमारे खानदानियत से बाहर की बात थी! ऐसा बहुत बड़ा अहंकार था कि हम ऐसा कर ही नहीं सकते इसलिए यों तो चोरी नहीं करते थे। हम खानदानी, हमारी इज़्ज़त चली जाए।

लेकिन बोलो, क्या यह चोरी नहीं कहलाएगी? क्या कहलाएगा?

प्रश्नकर्ता : चोरी ही कहलाएगी।

दादाश्री : तो इसका अर्थ क्या निकाला? उन दिनों के ज्ञान ने मुझे ऐसा बताया कि इसे चोरी नहीं कहते। मुझे ऐसा लगा कि 'यह तो मुझे मिली है इसलिए इसे चोरी नहीं कहेंगे,' हमें नीचे गिरी हुई मिली। 'गिरी और मिली', उसमें मैंने चोरी कहाँ की? ऐसा उन दिनों के ज्ञान ने मुझे बताया।

तेरह साल की उम्र में बुद्धि नहीं थी तभी यह हाल हुआ न!

प्रश्नकर्ता : लेकिन दादा, ऐसा कोई उदय आ गया होगा न!

दादाश्री : लेकिन बुद्धि नहीं थी तभी यह हाल हुआ न, और 'मिली है', ऐसा माना। समझ नहीं थी, तभी न!

प्रश्नकर्ता : लेकिन ऐसा तो आपको तेरह साल की उम्र में हुआ न! किसी को तो तिहत्तर साल की उम्र में भी ऐसा होता है।

दादाश्री : हाँ, तिहत्तर साल की उम्र में नहीं, वह तो अगर तीन लाख जन्म बीतने पर भी ऐसा डेवेलपमेन्ट नहीं होता न!

अँगूठी बेचकर पैसे खर्च कर दिए

प्रश्नकर्ता : फिर क्या हुआ?

दादाश्री : फिर दो-तीन दिन बाद पेटलाद जाकर वह अँगूठी बेच आए। उसके चौदह रुपए मिले थे। पोन तोले की होगी, मोटी अँगूठी थी लेकिन यह कितनी चोर नीयत कही जाएगी।

प्रश्नकर्ता : बीस रुपए तोला सोना था न तब?

दादाश्री : बाईस-तेईस रुपए, तो वह नीयत क्या बहुत अच्छी नीयत कहलाएगी?

प्रश्नकर्ता : नहीं कहलाएगी। लेकिन फिर क्या किया उन रुपयों का, दादा?

दादाश्री : वे रुपए खर्च कर दिए, छोटे-मोटे कामों में। इन लड़कों के साथ खेलने में खर्च हो गए। अंदर जो मोह का जत्था इकट्ठा हुआ था न, उसमें खर्च हो गए। दोस्तों का कुसंग मिला था न! कुसंग हो तभी ऐसा सब करना आ जाता है वर्ना नहीं आता।

अभी भी हमें खटकते हैं ये दोष

प्रश्नकर्ता : फिर पैसे वापस करने के लिए गए थे न आप?

दादाश्री : हाँ, फिर उसके मालिक से एक बार पूछने गया था, तो कोई नहीं मिला। दस साल बाद फिर से गया था वहाँ पर। मैंने पूछा, 'इस घर में फलाँना भाई रहते थे न वे?' तब कहा, 'वे तो नहीं हैं, वे तो मर गए'। उसके बाद कोई ठिकाना नहीं पड़ा। वर्ना मैंने सोचा था कि उसे दस गुना पैसे दे दूँगा या बीस गुना पैसे दे दूँगा और यदि वे कहें की सौ गुना दो तो सौ गुना, पाँच सौ गुना कहें तो पाँच सौ गुना दे दूँगा। चौदह पंचे सत्तर, सात हज़ार रुपए दे दूँगा उसे, लेकिन वह था ही नहीं। जब पता लगाने गया तो बाप या बेटा कोई मिला ही नहीं!

मैंने सोचा, 'अब क्या करूँ? तो कहीं धर्मदान करो'। इससे तो उसे कोई लेना-देना नहीं है लेकिन यह तो ऐसा सब जो हाल किया, वह भी खटकता रहा बाद में। फिर बाद में पता चला कि यह कैसा कर्म था लेकिन वह अभी भी खटकता है।

प्रश्नकर्ता : जब भी याद आता है तब?

दादाश्री : हमेशा खटकता है, याद तो रहता

ही है न, हमें निरंतर! याद आना नहीं होता। याद मतलब याद, वह मुझे दिखाई देता है निरंतर।

बचपन में मैंने पोने दो रुपए की एक चीज़ की चोरी की थी, वह अभी भी मुझे याद है। उसके बाद ज़िंदगी भर चोरी नहीं की लेकिन किसी कर्म के उदय से अभी भी वह मुझे याद आता रहता है और मन में होता है कि उसे दो सौ-पाँच सौ भिजवा देने चाहिए, उस व्यक्ति को।

हमारी तरफ से कुदरत को सौंप दिया

प्रश्नकर्ता : दादा! जब आप बताने गए तो तब वे भाई मर चुके थे?

दादाश्री : क्या हो सकता है? वह ताल नहीं बैठा!

प्रश्नकर्ता : तो अब यदि वे नहीं मिलेंगे तो उसका क्या फल आएगा? तो उसका परिणाम क्या होगा?

दादाश्री : वह तो कुछ भी नहीं। उसे तो हमें खुला छोड़ देना है। हमने कह दिया है जितना उनका हो वह योग्य रूप से हमारी तरफ से उन्हें मिल जाए। हमने ऐसा तय ही कर दिया है कि जिस-जिसका जितना योग्य है, वह हमारी तरफ से उन्हें प्राप्त हो जाए। यानी कि वह कुदरत को सौंप दिया।

व्यापार में अन्जाने में हुई चोरी

हमारा कॉन्ट्रैक्ट का काम था न, तो उसमें हम सीमेन्ट चोरी कर लेते थे। सरकार ने बीस बोरी लगाने को कहा हो तो हम सोलह लगाते थे और उसमें से जो चार बच जाती थीं तो दो साहब को दे देते थे और दो हम ले लेते थे। यह चोरी कहलाएगी या लूट?

प्रश्नकर्ता : दोनों में से जो भी कहना हो वह।

दादाश्री : आपने ऐसा कुछ नहीं किया है?

प्रश्नकर्ता : नहीं। हो जाती हो तो पता नहीं। बाकी, जान-बूझकर तो नहीं करते।

दादाश्री : सारी चोरियाँ ही की हैं। पूरी ज़िंदगी चोरियाँ ही की हैं। खुद को समझ में नहीं आने की वजह से ऐसा मानता है लेकिन पूरी ज़िंदगी चोरी ही की है। चोर स्थूल चोरी करते हैं और यह पकड़ में नहीं आए, ऐसी चोरी। इसे पुलिस वाले नहीं पकड़ते। सरकार भी नहीं पकड़ती।

प्रश्नकर्ता : पकड़ में नहीं आए और सभी की सेफ्टी रहे, ऐसी चोरियाँ होती हैं।

दादाश्री : हाँ, ऐसी ये सारी चोरियाँ। सोच-समझकर की गई चोरी। कैसी? चोर की चोरी बिना सोचे-समझे की गई चोरी। आपने कभी चोरी-वोरी की है?

प्रश्नकर्ता : दादा। चोरी हो जाती है लेकिन पता ही नहीं चलता कि यह चोरी हो गई है। यह चोरी हो गई है, ऐसा पता ही नहीं चलता।

दादाश्री : नहीं चलता। चलता ही नहीं न! मुझे तो, मैं जिस बेंच पर बैठता हूँ न, उस बेंच के बारे में भी लोगों को बताता हूँ कि, 'भाई, यह बेंच भी चोरी करके लाया था।' तब वे कहते हैं, 'आपको ऐसा बोलना चाहिए क्या? आप क्या चोर हैं? अरे भाई! तू सुन तो सही, बात तो सुन! यह बेंच किस तरह चोरी करके लाया वह तुझे बताता हूँ। हमारा कॉन्ट्रैक्ट का काम था तो सरकारी मकान में मालाबारी(लकड़ी) के पटिए थे, तो साहब ने कहा, 'हमें इन पटियों के बजाय स्लैब डाल देने हैं तो पटिए निकाल देना।' तो निकाल दिए। तब कहने लगे कि, 'पटिए तो बहुत अच्छे हैं इसलिए एक-दो पटिए मुझे भेज देना और एक-दो आप ले लेना और बाकी के सभी स्टोर में भेज देना।'

तो वे जो दो पटिए थे, उन्हें चिरवाकर, यह बैंच बनवाई। आरा मशीन में ले जाकर नहीं। बढ़ई से चिरवाकर बनवाया। तो 1943 में उसकी बयालीस रूपये मज़दूरी दी। यदि बाज़ार से खरीदते तो पैंतालीस में मिलता! तो बयालीस रुपया मज़दूरी दी। फिर भी मैंने सोचा, 'हाय-हाय यह तो चोरी की? और देखो, आए वहीं के वहीं!' तो इसी तरह की चोरियाँ की। मन में तो ऐसा मान बैठते हैं कि यह अच्छा हो गया, कमा लिया लेकिन यह सब चोरी का! ये भाई कहते हैं न, 'मैंने चोरी नहीं की। तो मैं कैसे कहूँ?' पता ही नहीं है न कि चोरी किसे कहते हैं! मुझे तो यह सब चोरी तुरंत ही दिखाई देती है। इसमें सच जैसी कोई चीज़ ही नहीं लगती मुझे। सब चोरी का बाज़ार है।

संकोच नहीं, खुद के दोष ज़ाहिर करने में

इस दुनिया में ऐसा कौन कह सकता है कि 'मैं गलत हूँ'? जो एकदम सच्चा है, वही कह सकता है। बाकी, तो सबकुछ अन्डर ग्राउन्ड, ढका हुआ ही रखते हैं। हम पूछें कि, 'साहब, कभी मन से भी चोरी की है?' तब कहेगा, 'नहीं भाई, ऐसा कुछ नहीं।' जबकि हम तो बता देते हैं कि, 'यह हम (जिस पर) बैठे हैं, वह बेंच भी चुराकर लाए हैं।' हम ऐसा क्यों कहते हैं? ताकि आपको हिम्मत आए, आप औरों को बता सको कि 'यह मैंने चुराया हुआ है।' यों बताना आ जाए न! उससे हृदय खुल जाएगा, हल्का हो जाएगा। कोई कबूल ही नहीं करता न! क्यों कोई कबूल नहीं करता? यह ज़रा मुट्ठी में हैं, वह खुल जाएगा तो बाहर पता चल जाएगा। लेकिन है ही कहाँ वह? दिखा तो सही कि इस मुट्ठी में क्या है? कहता है, 'पता चल जाएगा।' क्या है मुट्ठी में? बड़े आए!

प्रश्नकर्ता : दादा, आप कहते हैं कि मुट्ठी में कुछ भी नहीं है लेकिन लोग तो ऐसा ही मानते हैं कि इसी में सब है।

दादाश्री : दूसरा कोई बाप भी नहीं मानता। सिर्फ, इतना ही है कि मन में ही मान रखा है। कोई पूछता है? गलत पोलम्पोल चल सकता है? इसलिए तो हम कहते हैं कि 'यह बेंच चुराकर लाए हैं।' क्यों? ताकि आपको हिम्मत आए इसलिए। वे कहेंगे कि दादा कहते हैं तो हम भी ऐसा कहें। ऐसा करते-करते सब ठीक हो जाएगा। खुद के दोष बताने में, कहने में क्या हर्ज है? ओपन टू स्काई कर दो! हर्ज क्या है? तुरंत बिक जाएगा न, माल अपना? जिसे बेच देना है, क्या उसे अब वापस स्टॉक में दबाकर रखेंगे? ऐसे कब तक दबाएँगे? ऑन ऑक्शन, ऑन ऑक्शन करने पर क्या होता है? कब तक संभाले रखना है? एक बार बेच दिया तो निबेड़ा आ जाएगा। बेच नहीं देना चाहिए?

प्रश्नकर्ता : बेच देना चाहिए।

दादाश्री : कभी न कभी तो निकाल देना पड़ेगा न, इस माल को दुकान में से! दुकान खाली करने लगे हैं, इसलिए!

अत: निपटा देना है। अब, लगाम अपने हाथ में आ गई है। पतंग की डोर अपने हाथ में आ गई है इसलिए अब हर्ज नहीं। अब कहना, 'आपको जो लेना हो, वह ले जाओ।' डोर अपने हाथ में आ गई। यदि पलटी खाएगी तो खींच लेंगे तो तुरंत ही ठीक हो जाएगी और जब तक हाथ में धागा नहीं था तब तक पलटी खाती तो? शोर मचाने से कुछ होता है क्या?

हम भी चोरी में फँस गए थे

प्रश्नकर्ता : व्यापार में जो चोरी करते हैं, उसके लिए क्या करना चाहिए?

दादाश्री : वह सब तो हमने बहुत किया है भाई ! लेकिन माफी माँग लेनी है।

प्रश्नकर्ता : अभी जो व्यापार चल रहा है....

दादाश्री : आप याद करके, सभी को याद कर-करके माफी माँग लेना। माफी माँगने से अपना कर्म खत्म तो नहीं होगा लेकिन यहाँ पर जो पक्की गाँठ पड़ चुकी है, वह यों माफी माँगने से एकदम ढीली हो जाएगी। फिर अगले जन्म में हाथ लगाते ही वह गिर जाएगी इसलिए फिर कुछ खास परेशान नहीं करेगी।

माफी माँगने से चौदह आना नाश हो जाता है, दो आना बाकी रहता है। उतना नाश तो करना ही चाहिए न, अपने से हुए गुनाह का? हो जाता है लेकिन अन्जाने में हो जाता है, जान-बूझकर नहीं होता।

प्रश्नकर्ता : इन्कम टैक्स की चोरी की है, कोई और चोरी नहीं की है।

दादाश्री : इन्कम टैक्स की चोरी करना गुनाह है क्योंकि उस टैक्स की वजह से, गवर्नमेन्ट आपको संभाल पाती है। कुदरत क्या कहती है कि तू चोरी करेगा तो मैं चोरी करूँगी। वर्ना तेरे नौ हज़ार तुझे मिलने हैं, बारह महीने में वे नौ मिल जाएँगे। नौ के नौ मिल जाएँगे। न्यायी बनने पर एक-दो साल ज़रा परेशानी होगी लेकिन व्यापार फर्स्ट क्लास चलता रहेगा। अत: न्याय से, नीति से व्यापार करना। क्या कहा?

प्रश्नकर्ता : न्याय और नीति से करना।

दादाश्री : सामने वाला अनीति करे फिर भी हमें नीति नहीं छोड़नी है। हमने भी चोरी करते-करते, 1951 में बंद कर दी थी। देखो, जन्म से ही ज्ञानी पुरुष जैसा था फिर भी इन चोरियों में फँस गया न! पश्चाताप कर-करके फिर दम निकल गया। 1951 से अब तक। तीस-पैंतीस साल तक बहुत पश्चाताप किए। पहले ऐसी चोरियाँ करते थे कि सरकार की पकड़ में नहीं आएँ, वे हमने छोड़ दीं कि अगर सरकार में पकड़े जाएँगे तो इज़्ज़त चली जाएगी। उसके अलावा बाकी सभी प्रकार की चोरियाँ की हैं..।

फादर से छल किया, किए खूब प्रतिक्रमण

हमारे फादर से एक ज्योतिषी ने कहा था कि 'आपके घर में एक बहुत बड़े रत्न ने जन्म लिया है। देखते रहना कि इसके संस्कारों में ज़रा-सी भी कमी नहीं आए'। अब फादर तो कितना ध्यान रख सकते थे? मैं उन्हें छलता तो वे कितना देख पाते? मैं सिनेमा-नाटक देखने जाता था, भादरण में। जब मैं नाटक देखने जाता था तब फादर को ऐसा रहता था कि यह सो गया है क्योंकि पहले सो जाता था फिर उठकर खिड़की से कूदकर निकल जाता था। सिर्फ बा को ही यह पता रहता था। बा मुझसे कहती थीं कि, 'भाई, तू गिर जाएगा। ऐसा मत कर'। मैंने कहा, 'नहीं, वे मुझे डाँटेंगे। मैं तो ऐसा ही करूँगा'। ऐसी बहुत सी शरारतें की हैं।

फादर को छला था, बा को नहीं छला। मैं जो कुछ भी करता था, वह सिर्फ बा को बता देता था। मुझे ऐसा डर रहता था कि फादर डाँटेंगे। उनसे कह देता था कि 'मैं नहीं गया। रात को सो गया था।' हालाँकि मैं नाटक देखकर आया होता था। फिर जब लोग उन्हें कहते थे कि 'आपका बेटा तो नाटक देखने आता है'। तब फिर वे कहते थे कि 'तू कब गया था? तू कब उठा था?' मैंने कहा, 'मैं तो कुछ देर बाद वापस आ गया था'।

अत: इन सब के लिए बहुत प्रतिक्रमण किए। घर में मैंने क्या-क्या किया, यहाँ क्या-क्या किया? फादर के साथ में क्या-क्या दगा किया? वे कहते थे कि 'नाटक आया है, तुझे देखने जाने की ज़रूरत नहीं है'। तब कहता था, 'हाँ, नहीं जाऊँगा'। और नाटक देखकर आकर चुपके से, बा को पहले से ही बता देता था कि, 'मैं आऊँ तब दरवाज़ा ज़रा खुला रखना' तो वे दरवाज़ा खुला रखती थीं और

मैं एकदम से अंदर घुस जाता था। ये सारे गुनाह ही किए हैं न!

कुसंग के रास्ते पर चल पड़े दोस्तों के संग

प्रश्नकर्ता : दादा, खराब आदतें थी क्या बचपन में?

दादाश्री : हाँ, पंद्रह साल की उम्र में हमें कुसंग में बीड़ी पीने की आदत पड़ गई। उसे सत्संग कहो या कुसंग कहो। या फिर मैं कुसंगी रहा होऊँगा और उन्हें कुसंगी बनाया। इस तरह कुसंग के रास्ते पर चले गए थे। तो बीड़ियाँ, सिगरेट, हुक्का पीते थे। ज़ोर-दार! सभी दोस्त पीते थे।

अभी भी मुझे दिखाई देता है कि शादी के अवसर पर एक दोस्त के वहाँ गया था तो शादी का मंडप बाँधा हुआ था तो उस मंडप के नीचे बैठकर स्त्रियाँ, बड़ी कढ़ाई में *ढेबरा* (बाजरे का एक व्यंजन) तल रही थीं। उनके ऊपर मंडप बाँधा हुआ था। उनके साथ वाले रूम में हम सब दोस्त बैठे-बैठे मस्ती कर रहे थे।

मैं सिगरेट पी रहा था, तो मैंने यों सिगरेट खिड़की से बाहर फेंकी और वह चद्दर पर जा गिरी। वहीं पर जिसके नीचे वे लोग तल रहे थे।

क्या कभी ऐसा हुआ है कि सिगरेट से बड़ी आग लग जाए? लेकिन कैसे संयोग इकट्ठे हुए? नीचे *ढेबरे* तले जा रहे थे। वर्ना सिगरेट तो आखिर में छेद करके नीचे गिर जाती है।

प्रश्नकर्ता : हाँ, नीचे गिर जाती।

दादाश्री : अब नीचे वह चूल्हा जलाया हुआ था न, इसलिए चद्दर गरम हो गई थी और यह सिगरेट गिरते ही धमाका हो गया।

प्रश्नकर्ता : वह सब गरम हो गया न, इसीलिए जल उठा।

दादाश्री : गरम होने से धमाका हो गया। दोस्तों ने तो सारी बात दबा दी कि यह कैसे हुआ, कैसे नहीं हुआ, वह सब दबा दिया। लेकिन यह बहुत बुरा हुआ। तब तो फिर मुझे बहुत पछतावा हुआ कि 'अरे, ऐसा सब अपने हाथों, अपनी वजह से! हम कहाँ इसके निमित्त बने?' बोलो, फिर सिगरेट से चिढ़ हो जाएगी या नहीं?

हमारे दूसरे एक दोस्त को तो पता नहीं था कि ऐसा सब हुआ है। तो उसके घर पर मैं जली हुई सिगरेट डालता था, तो जली हुई डालने की आदत इसलिए वह मुझ पर गुस्सा करता था कि जल उठेगा, कुछ जल उठेगा। तब मैं कहता था कि 'भाई, अपने हाथों तो शायद ही कभी ऐसा होता है। जो नहीं जलना था, वह वहाँ पर जल उठा और यहाँ पर तो यह सारा हिसाब अलग तरह का है। घबराना मत, तू मत घबराना'। बुझाने भी जाता था फिर। हमें खुद को समझ में आता था कि यह जलती हुई सिगरेट फेंकने की आदत गलत है। इस बारे में जागृति रखनी पड़ेगी।

ताश के खेल में ठगा गया, पैसों के लोभ की वजह से

प्रश्नकर्ता : दादा, आपने गलतियाँ तो की लेकिन फिर उन पर खूब सोचा है, जागृत रहे हैं। यदि फिर से ऐसी कोई गलती हो गई और वापस आप उसमें से छूट गए हों, ऐसी बातें बताइए न!

दादाश्री : बचपन में एक बार मैं पहली बार नडियाद गाँव गया था। उस समय मेरी उम्र ग्यारह-बारह साल की थी।

प्रश्नकर्ता : यानी पहली बार नडियाद गए थे?

दादाश्री : हाँ, पहली बार नडियाद। तब नडियाद ऐसा नहीं था, जंगल जैसा था। एक बारात में नडियाद गए थे। वहाँ दस दिन तक रहा था।

बारात में गया था, वह सब मुझे याद है! वहाँ ताश खेलने में ठगा गया। उस गोल चक्कर में ताश खेलते हैं न? तो तीन पत्ती खेला और हार गया।

प्रश्नकर्ता : तीन पत्ती खेलते थे उस समय?

दादाश्री : हाँ, तब तीन पत्ती खेलते थे। उन दिनों खेलने गया था। क्या मित्र भी देवता जैसे थे? तीर्थंकरों के लिए तो सभी देवता, मित्र बनकर आते हैं और हमारे मित्र तो ऐसे थे कि ताश-वाश खेलते थे। जब ताश खेलते हैं तब तो अहंकार इन्टरेस्ट से उसमें सही-गलत भी करता है। मित्रों के संग में लेकिन मूल माल अंदर का ही न!

वहाँ पर तीन पत्ती में ठगा गया। पंद्रह रुपए, उन दिनों पंद्रह रुपए, वह भी घर के नहीं, किसी ने दस-बारह रुपए दिए थे, कुछ लाने के लिए। मेरे पास तो दो-चार रुपए ही थे। बाकी के उस व्यक्ति के थे। तो उसके पैसे भी इसमें चले गए, तो मैं परेशान हो गया था उस समय, तीन पत्ती में खो दिए सभी!

प्रश्नकर्ता : तीन पत्ती?

दादाश्री : तीन पत्ती का मतलब आज की तीन पत्ती नहीं, वह तो ज़रा यों?

प्रश्नकर्ता : हाँ, ऐसे-ऐसे करते थे न, तीन पत्तों में।

दादाश्री : हाँ, पहले जितवाते थे, एक-दो बार।

प्रश्नकर्ता : हाँ, वे ऐसे-ऐसे करके फेंकते थे। लेकिन शुरू-शुरू में ऐसा दिखाते थे। पहले तो वे कहते थे कि 'लो पाँच आपके'। फिर दूसरी बार में दो देते थे ताकि हम में लोभ जागे। फिर कहते थे, 'हाथ मारो'।

दादाश्री : हाँ, फिर से देते थे। लेकिन अपनी मति कमज़ोर पड़ जाती है न! क्या है यह सारी सेटिंग? कैसे समझें इन इंसानों को? ग्यारह-बारह साल का बच्चा! बच्चे तो सरल होते हैं। तो मौज-मज़े की जगह पर धोखा खा जाते हैं। अगर मौज-मज़े किए ही नहीं हों वे तो अस्सी साल की उम्र में भी मौज-मज़े की जगह पर धोखा खा जाते हैं। उसके बजाय पहले से ही धोखा खा लें तो अच्छा। अनुभव किया हो तो फिर धोखा तो नहीं खाएगा न!

प्रश्नकर्ता : धोखा नहीं खाएगा।

दादाश्री : तो पहले उसने दिखाया, दो-तीन बार, तो हम तो ठहरे भोले-भाले इंसान और गाँव के लोग। मैंने समझा कि यह सब तो मुझे आ गया लेकिन उस तीन पत्ती वाले ने ठग लिया। मैं जो चौदह-पंद्रह रुपए ले गया था वे सभी ले लिए। फिर ज़िंदगी में नियम बना लिया कि फिर से कभी भी ऐसा काम नहीं करना है।

फिर, घर पर तो नहीं बता सकते थे कि इस तरह से पैसे खर्च कर दिए सारे। बाद में धीरे-धीरे जैसे-तैसे करके दे दिए थे। बताने पर ही कोई मुझे देता न! तो ये सारी परेशानियाँ थी!

प्रश्नकर्ता : झूठ बोलना पड़ता है।

दादाश्री : हाँ, बोलना पड़ता है। उसके बजाय तो वह सारी झंझट ही नहीं होनी चाहिए न! कुछ-कुछ, दो-दो रुपए इकट्ठे होते और दे देते थे।

फिर नहीं होने दी वह भूल

प्रश्नकर्ता : फिर तब से आपने कसम खाई कि अब कभी भी इस तरह ताश नहीं खेलना है।

दादाश्री : हाँ, कसम खा ली न! बेकार ही दु:खदाई काम क्यों करें हम? और तभी से हमें यह शिक्षा मिली कि अब इन लोगों के पास खड़े भी नहीं रहना है। सब को ऐसा लगता है कि इसमें कुछ मिलेगा। अरे! भाई ऐसा कहीं होता है? क्या

लोग आपके फायदे के लिए बैठाते हैं यहाँ पर? इसके बाद तो जो जागृति आ गई, फिर उससे तो वापस इस तरह धोखा नहीं खाया। एक ही बार देखना होता है। गिन्नी की जाँच एक ही बार करनी पड़ती है। रोज़ नहीं घिसना होता।

बचपन में इस बारे में ज्ञान मिला, उसके बाद पहचान लिया। तब फिर मैंने सोचा, 'कल्याण हो गया अपना! लुटे तो लुटे लेकिन चोर तो दिखा'। फिर हम जहाँ कहीं भी ऐसा देखते तो तुरंत वहाँ जाना बंद, ज़िंदगी भर। यानी धोखा खाने से कोई नुकसान नहीं हुआ। 'धोखा खाना अर्थात् बड़े से बड़ा ज्ञान सीखना', ऐसा कहा जाता है। देखो न! क्या हम फिर से कभी धोखा खाएँगे? अब इशारे से ही समझ जाता हूँ। मेरी उपस्थिति में मुंबई में कई लोग बैठ गए थे। मुझे आता हुआ देखते तो वो दो-तीन लोग सीधे बनकर (फँसाने के लिए) बैठ जाते थे। मैं जाता था, खड़ा भी रहता था, वे समझते थे कि अभी फँसेंगे लेकिन वहाँ से खिसक जाता था। खड़ा ज़रूर रहता था। उनमें ज़रा लालच घुसने देता था, फिर खिसक जाता था क्योंकि निष्कर्ष आ गया था मेरे पास।

प्रश्नकर्ता : वे धोखा खा जाते थे।

दादाश्री : हाँ, धोखा खा जाते थे... देखो न, कैसा सब हिसाब!

अब गलती समझ में आती है, मज़ाक उड़ाने की

प्रश्नकर्ता : आपके बारे में कहा जाता है कि आप तो ऐसे ही शरारती थे। आपने और कैसी शरारतें की थीं?

दादाश्री : अरे, कई तरह की शरारतें! बच्चे जैसी शरारतें करते हैं, वैसी सभी।

प्रश्नकर्ता : बताइए न दादा, थोड़ा-बहुत, कैसी शरारतें की थीं?

दादाश्री : मज़ाक उड़ाता था लोगों का और ठिठोली-विठोली वगैरह। मुझे मज़ाक उड़ाने की बहुत आदत थी। क्या आपने बचपन में किसी का मज़ाक उड़ाया है? मैंने तो बहुत उड़ाया है, भाई!

मुझे तो अभी भी वह सब नक्शे की तरह दिखाई देता है। जैसे नक्शे में न्यूयोर्क दिखाई देता है, शिकागो दिखाई देता है वैसा दिखाई देता है इसलिए मन में ऐसा होता है कि, अरेरे! कैसे-कैसे दोष! मज़ाक यानी बहुत नुकसानदेह नहीं, लेकिन सामने वाले के मन पर तो असर होता था न! सामने वाले को दुःख होता था न बेचारे को, लेकिन अब उस समय वह हमें पता ही नहीं था न, होश ही नहीं था न!

हम भी बूढ़े बुज़ुर्ग लोगों का मज़ाक उड़ाते थे। तो क्या अब मैं बूढ़ा नहीं हूँ? क्या कोई मेरी मज़ाक नहीं उड़ाएगा? उन्हें बुरा लगता था फिर भी मज़ाक तो उड़ाते ही थे न! बच्चों को क्या?

अब मेरी उम्र वालों की आँखें तो बेचारों की कमज़ोर हो चुकी होती है। अगर लोग मेरे कमरे में दो-चार पिल्ले छोड़ दें तो मेरी क्या दशा होगी? वैसा ही उन बूढ़े बुज़ुर्गों को हुआ होगा, जब हम वहाँ पर पिल्ले छोड़कर आ जाते थे। अब मैं सोचता हूँ कि 'ऐसा कैसा किया हमने? यदि कोई हमारे साथ ऐसा करें तो क्या होगा?'

फिर वे बुज़ुर्ग पूरी रात चिल्लाते रहते थे कि 'ये बच्चे मर भी नहीं जाते। मेरे यहाँ पिल्ले छोड़ गए'। लेकिन अब समझ में आता है कि यह सब गलत किया था। उन दिनों कैसी भूलें की थीं! बचपन में, छः-सात साल की उम्र में क्या नहीं करते बच्चे?

सीखे गलत गुरुओं से मज़ाक उड़ाना

प्रश्नकर्ता : दादा, आप छोटे थे तब से गड़बड़ी वाले थे?

दादाश्री : सभी गड़बड़ी वाले! मैं अकेला ही ऐसा नहीं था।

प्रश्नकर्ता : आप सभी बातों में अव्वल लगते हैं। उसी तरह, जैसे ज्ञान के शिखर पर आ पहुँचे।

दादाश्री : मुझे ज़रा ज़्यादा समझ में आता था यह सब लेकिन यह सब तो गलत है न! अभी, मेरी तो आँखें हैं लेकिन अगर किसी की आँखें न हों तो उसकी क्या दशा होगी? छिहत्तर साल की उम्र में जब पैर न चलें, बाकी कुछ भी न चले, चाचा को पकड़ना भी पड़ता था। एक चाचा को दोनों ही आँखों से दिखाई नहीं देता था। वहाँ पर भी पिल्ले छोड़ दिए थे। गलत है न! इस तरह का बहुत पागलपन था। हमारी बचपन की ज़िंदगी देखते हैं तो बहुत बुरा लगता है। उन बुज़ुर्गों की कैसी दशा हुई होगी?

बुढ़ापा यानी पुराना मंदिर! उनकी क्या दशा होती होगी? वह नए मंदिर वालों (जवान लोगों) को क्या पता चले? बूढ़े लोग जब ऐसे-ऐसे करके चलते थे न, तब उसी तरह उनके पीछे चलकर मज़ाक उड़ाया है लेकिन पता नहीं था कि जब यह मंदिर पुराना हो जाता है तो क्या दशा होती है?

मज़ाक उड़ाना कहाँ से सीखते हैं? अपने इन गुरुओं से (आसपास वाले लोगों से)! जो भी संयोग मिलते हैं, वे सब हमारे गुरु। वे जैसा करते थे, हम भी वैसा ही करते थे। वे सभी यदि माता जी के पैर छूते थे और ऐसी गुद्‌गुदी करते थे तो हम भी वैसा ही करते थे। वे सब मज़ाक उड़ाते थे तो हम भी मज़ाक उड़ाते थे।

किए प्रतिक्रमण मज़ाक के जोखिम को समझकर

बाकी, मैंने सभी तरह की शरारतें की हुई हैं। हमेशा सभी तरह की शरारतें कौन करता है? बहुत टाइट ब्रेन (तेज़ दिमाग़) हो, वह करता है। मैं तो आराम से हँसी उड़ाता था सभी की। अच्छे-अच्छे लोगों की, बड़े-बड़े वकीलों की, डॉक्टरों की मज़ाक उड़ाता था। अब, वह सारा अहंकार तो गलत ही है न! वह तो अपनी बुद्धि का दुरुपयोग किया न! मज़ाक उड़ाना तो बुद्धि की निशानी है।

प्रश्नकर्ता : मुझे तो अभी भी मज़ाक उड़ाने का मन होता है।

दादाश्री : मज़ाक उड़ाने में बहुत जोखिम है। बुद्धि में मज़ाक उड़ाने की शक्ति होती ही है और फिर उसका जोखिम भी उतना ही है। हमने उन दिनों ऐसा जोखिम मोल लिया था। जोखिम ही मोल लेते रहे।

प्रश्नकर्ता : मज़ाक उड़ाने में क्या-क्या जोखिम हैं? किस-किस तरह के जोखिम हैं उसमें?

दादाश्री : ऐसा है कि किसी को धौल लगाने में जितना जोखिम है, मज़ाक उड़ाने में तो उससे अनंत गुना जोखिम है। उसकी बुद्धि इतने तक नहीं पहुँचती इसीलिए आपने अपनी लाइट से उसे कब्ज़े में किया। तब फिर वहाँ पर भगवान कहेंगे, 'इसमें बुद्धि नहीं है तो उसका यह फायदा उठा रहा है!' वहाँ पर हमने, खुद भगवान को अपना विरोधी बना दिया। किसी अक्ल वाले को धौल लगाई होती तो, वह समझ जाता बेचारा और वह खुद उसका मालिक बन जाता। जबकि इसकी बुद्धि तो वहाँ तक पहुँचती ही नहीं। अत: हम उसकी मज़ाक उड़ाते हैं इसीलिए वह खुद उसका मालिक नहीं बनता। तब भगवान समझते हैं कि 'ओहोहो! इसमें बुद्धि नहीं है, इसमें बुद्धि कम है, तो तू उसे फँसा रहा है? आ जा', वे तो फिर अपने जोड़ तोड़ देंगे।

प्रश्नकर्ता : हमने तो मुख्य रूप से यही धंधा किया है।

दादाश्री : लेकिन अभी भी उसके प्रतिक्रमण कर सकते हो न! हमने तो वही किया है न! और

वह तो बहुत गलत था। मेरी तो यही परेशानी थी। अंतराय वाली बुद्धि थी तो वह क्या करती? बलवा तो करती ही है न! बुद्धि ज़्यादा बढ़ गई उसका इतना लाभ हुआ न! इसलिए इन मज़ाक उड़ाने वालों को बिना बात का दुःख भुगतना पड़ता है।

कोई ऐसे-ऐसे चल रहा हो और यदि उस पर हँसे, मज़ाक उड़ाएँ, तो भगवान कहेंगे, 'लो यह फल।' इस दुनिया में किसी भी प्रकार का मज़ाक मत करना। मज़ाक उड़ाने की वजह से ही ये सब अस्पताल बने हैं। ये पैर-वैर सब टूटा-फूटा जो माल है न, वह मज़ाक उड़ाने का फल है। हमें भी यह मज़ाक उड़ाने का फल आया है।

इसलिए हम कहते हैं न, 'मज़ाक उड़ाना तो बहुत गलत बात है क्योंकि भगवान का मज़ाक उड़ाया, ऐसा कहा जाएगा। भले ही गधा है लेकिन आफ्टर ऑल (आखिरकार) क्या है? भगवान है।' हाँ, आखिर में तो भगवान ही हैं न! जीवमात्र में भगवान ही रहे हुए हैं न! मज़ाक किसी का नहीं उड़ाना चाहिए न! आप हँसोगे न, तो भगवान समझेंगे कि 'हाँ, अब आ जा, तेरा हिसाब कर देता हूँ इस बार।'

प्रश्नकर्ता : अब उसके उपाय के लिए प्रतिक्रमण तो करने ही पड़ेंगे न?

दादाश्री : हाँ, करने ही पड़ेंगे न! चारा ही नहीं है।

प्रश्नकर्ता : 'दादा, यदि ऐसा कहें कि, आपकी साक्षी में ज़ाहिर करके, माफी माँगकर प्रतिक्रमण करता हूँ,' तो?

दादाश्री : 'दादा! आपकी साक्षी में....' बोले न, तो भी चलेगा। 'इस वाणी के दोष से जिन-जिन लोगों को दुःख पहुँचा हो, उन सब से क्षमा माँगता हूँ।' तो पहुँच जाएगा।

पार्टनर को बनाया बुद्धू

यह ज्ञान होने से पहले मुझे शरारत करने की बहुत आदत थी। एक बार मेरे पार्टनर सी. पटेल के साथ घूमने जा रहा था। उन्होंने कहा कि, 'आप सब बताते हो तो यह बताओ कि यह पौधा किस चीज़ का है?' मैंने कहा, 'इलायची का'। उस पर छोटी-छोटी फुनगी आई थीं। उन्होंने मान भी लिया। बाद में फिर घर गए और बुज़ुर्गों से बात की कि 'यहाँ पर इलायची बहुत होती है'। तब उन्होंने पूछा, 'अरे! किसने बताया?' तब उन्होंने कहा, 'मेरे पार्टनर ने बताया, उस अंबालाल ने।'

तब वे बुज़ुर्ग मेरे पास आए और मुझसे कहा कि 'अरे, इलायची कहाँ उग रही है?' तब मैंने कहा कि 'मैंने तो उसे बुद्धू बनाया लेकिन आप बुद्धू क्यों बने?' इलायची तो पौधे पर नहीं लेकिन जड़ में उगती है।

अधिक, बुद्धि का दुरुपयोग, मज़ाक उड़ाने में

यदि हम में बुद्धि अधिक हो तो उसका उपयोग किसमें होता है? कम बुद्धि वाले का मज़ाक उड़ाने में! जब से मुझे यह जोखिम समझ में आया, तभी से मज़ाक उड़ाना बंद हो गया। कहीं मज़ाक उड़ाना चाहिए? मज़ाक उड़ाना तो भयंकर जोखिम है, गुनाह है! किसी का भी मज़ाक नहीं उड़ाना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : लेकिन अधिक बुद्धि वाले का मज़ाक उड़ाने में क्या हर्ज है?

दादाश्री : लेकिन कम बुद्धि वाला स्वाभाविक रूप से मज़ाक उड़ाएगा ही नहीं न!

अंतराई हुई बुद्धि, कहलाए *'सलियाखोर'*

प्रश्नकर्ता : बुद्धि अंतरायी हुई थी, वह क्या है दादा?

दादाश्री : अंतरायी हुई बुद्धि ऐसा ढूँढ निकालती है। अंतरायी हुई बुद्धि क्या करती है? शरारत करती है या नहीं?

उन दिनों बुद्धि अंतरायी हुई थी न! तो वह शरारत करके परेशान करती थी। बुद्धि में अंतराय होते हैं न, तो जब और कोई मज़ा नहीं आता तब परेशान करता है और फिर कहता है, 'मज़ा आ गया'। *सली* (छेड़ने) का मतलब क्या है? खुद यहाँ पर बैठा हो और पटाखा वहाँ फूटता है तो उसे कहते हैं *सली*! तो यह बुद्धि उल्टी-सीधी होती ही रहती थी न! तब लोग ऐसा समझते थे कि यह '*सलियाखोर*' है और हम भी कहते हैं कि 'भाई, हम *सलियाखोर* ही थे।'

प्रश्नकर्ता : आप सीधी *सली* (पॉज़िटिव शरारत) भी करते होंगे न?

दादाश्री : सीधी *सली* भी करते थे, लेकिन वह कम! ज़्यादातर तो उल्टी। सीधी की तो कुछ पड़ी ही नहीं थी न! और उल्टी तो कहाँ तक? अगर कोई आदमी नहीं मिले तो आखिर में किसी बच्चे को सिखाता था कि 'अरे, उस गधे के पीछे खाली डिब्बा बाँध दे।'

अरे! गधे के पीछे तो हम सब बच्चों ने मिलकर डिब्बे भी बाँधे हैं। फिर पूरी रात वह गधा उछल-कूद ही करता न! तो पूरी रात शोर होता था। लोगों को सोने ही नहीं देता था फिर, लोगों को नींद नहीं आती थी। एक तो लोगों के पास कोई काम-धंधा नहीं था, बेकार थे। तो (आवाज़) सुनाई देते ही देखते थे कि 'यह क्या हुआ? अरे! यह तो गधे के पीछे डिब्बा बाँधा हुआ है!'

गधे की पीठ पर खाली डिब्बा बंधवा देते थे और फिर पीछे से वे बच्चे उसे भगाते थे। तो इस तरह पूरे गाँव में शोर शराबा हो जाता था। फिर लोग गालियाँ देते थे कि 'इन लड़कों का सत्यानाश हो!' इस तरह से बुद्धि का पूर्ण दुरुपयोग हुआ था। आपको तो यह सब नहीं आता था न?

यह सब ऐसा है, ये सारे गाँव के संस्कार हैं न! और हम तो मूल रूप से बिल्कुल टेढ़ी जाति, झगड़े करना अच्छा लगता था...., यह तो ज्ञान मिला तो अब सब रास्ते पर आ गया है।

ज्ञान से पहले सभी जैसा ही कलियुगी जीवन

यह तो सभी जानते हैं कि अभी दादा को ज्ञान हो गया है इसका मतलब पहले का जीवन साफ-सुथरा बीता होगा! लेकिन क्या कलियुग में ऐसा साफ-सुथरा माल हो सकता है? जब गुस्सा हो जाता था न, तब ऐसा बोलता था कि सामने वाले का दिमाग़ घूम जाता था। फिर तीन-तीन, चार-चार घंटे तक वैसा ही रहता था। उसका मन नहीं टूट जाता था लेकिन दिमाग़ घूम जाता था। तब लोग भी कहते थे, 'ऐसा कैसा बोल रहे हो कि गधे का भी दिमाग़ घूम जाए?' ज़रा, संस्कारों की कमी कही जाएगी वह।

मुझ में बचपन से ही लोभ नहीं था लेकिन मान बहुत भारी था इसलिए क्रोध भी भारी था!

प्रश्नकर्ता : मान में ज़रा सी भी मगज़मारी हुई तो आप कोपायमान हो जाते थे, ऐसा न?

दादाश्री : मान में एक बाल जितनी भी कमी हो जाए न, तो भयंकर उत्तापन होती थी और सामने वाला भी काँप जाता था बेचारा! सामने वाले को जलाकर रख दे ऐसा क्रोध निकलता था, ऐसा ज़बरदस्त क्रोध था क्योंकि अन्य कोई लोभ वगैरह नहीं था न! कई बार तो अज्ञानता में मेरा जो क्रोध था, वह यदि सचमुच में भभक उठे तो सामने वाला व्यक्ति वहीं के वहीं मर जाए। एक सिख तो मरने जैसा हो गया था, तो मुझे उसे देखने जाना पड़ा था। जब सिर पर हाथ फेरा तब जाकर ठीक हुआ।

अत: हम इस स्थिति में थे। घर पर बहुत रुपये नहीं थे। सिर्फ ऊपर का दिखावा! उसमें यह परेशानी, बेहद चिंता!

प्रश्नकर्ता : आपमें भी पहले इतना अधिक गुस्सा था, उसके बावजूद भी आप आज इस कक्षा तक पहुँच पाए?

दादाश्री : हाँ, वह गुस्सा भी कैसा? गाँव जला दे, ऐसा गुस्सा। यदि कभी कोई बहुत अपमान कर दिया न, तो गाँव को भी जला दे! बोलो, ऐसा इंसान या तो नरक में जाता है या फिर इस तरफ चले तो बहुत आगे तक पहुँच जाएगा! अत: यह बहुत कठिन हिसाब था! वह तो अच्छा हुआ कि लोगों ने ठोक पीटकर सीधा कर दिया। सीधा करते हैं या नहीं?

प्रश्नकर्ता : सीधा करते ही हैं।

दादाश्री : मुझे ठोक पीटकर सीधा कर दिया! अंत में सीधा तो होना ही पड़ेगा न!

किए प्रतिक्रमण ज़ोर-दार

उस वक्त अज्ञान दशा में हमारा अहंकार बहुत था। 'फलाँने ऐसे, फलाँने वैसे' यानी तिरस्कार, तिरस्कार... और किसी की तारीफ भी करते थे। एक की तारीफ करते और एक का तिरस्कार करते थे। फिर 1958 में ज्ञान हुआ तब से 'ए.एम.पटेल' से कह दिया कि, 'ये सब जो तिरस्कार किए हैं, धो डालो अब, साबुन लगाकर,' इन सब को खोज-खोजकर हर एक का धो दिया है। इस तरफ के पड़ोसी, उस तरफ के पड़ोसी, इस तरफ के परिजन, मामा, चाचा, अरे! सभी का तिरस्कार किया होता है! इन सब के (तिरस्कार) धो डाले।

प्रश्नकर्ता : मन से प्रतिक्रमण किए थे? सामने जाकर नहीं?

दादाश्री : 'मैंने' अंबालाल पटेल से कह दिया कि, 'यह आपने उल्टा किया है, वह सब मुझे दिखाई देता है। अब तो वह सारा उल्टा किया हुआ धो दो!' तब उन्होंने क्या करना शुरू कर दिया, 'कैसे धोने हैं?' तब मैंने समझाया कि वह याद करो। चंदूभाई को गालियाँ दी हैं और ज़िंदगी भर डाँटा है, तिरस्कार किया है, उन सब का वर्णन करके और 'हे चंदूभाई के मन-वचन-काया के योग, भावकर्म-द्रव्यकर्म व नोकर्म से भिन्न ऐसे प्रकट शुद्धात्मा भगवान! इन चंदूभाई से बार-बार माफी माँगता हूँ। दादा भगवान की साक्षी में माफी माँगता हूँ। फिर कभी ऐसे दोष नहीं करूँगा।' आप ऐसा करो फिर आपको सामने वाले के चेहरे पर बदलाव दिखाई देगा। उसका चेहरा बदला हुआ लगेगा। आप यहाँ प्रतिक्रमण करते हो और वहाँ बदलाव होता है।

प्रश्नकर्ता : क्या रूबरू प्रतिक्रमण कर सकते हैं?

दादाश्री : रूबरू कर सकते हैं। यदि रूबरू करना है तो कोई बहुत खानदानी इंसान हो तभी करना। वर्ना कहेगा, 'अब अक्ल आई न! मैं जब कह रहा था तो नहीं माना, और अब सयानी हो गई।' घन चक्कर! उल्टा अर्थ निकाला उसने? फिर झिड़कता है बेचारी को। इसके बजाय तो रूबरू में मत करना। ये तो सब नासमझ लोग है। वह तो कोई ही खानदानी व्यक्ति होता है जो नरम हो जाता है और यह तो कहेगा, 'अब होश आया? मैं कब से कह रहा था, मान ही नहीं रही थी।' वह क्या कहेगा, वह भी मुझे पता होता है और आपको क्या हुआ, वह भी मुझे पता होता है। नाटक, ड्रामा! अत: हम ऐसा प्रतिक्रमण कर लेते हैं।

लेकिन इससे रही पवित्रता चरित्र की

हमें तो सभी रंग लगे थे, कुछ ही रंग नहीं

लगे थे। कवि ने कहा है न कि 'जिनके सभी अंग पवित्र हैं। वे पवित्र अंग हैं,' क्या कहा था आपने?

प्रश्नकर्ता : 'सर्वांगे पवित्रता वेदी है, अद्वितीय महानता ऐसी है।'

दादाश्री : अत: इन सभी अंगों में पवित्रता फैली हुई है। वह मेरा पुरुषार्थ नहीं है। यह तो मैं लेकर आया था ऐसा सारा सामान, एविडेन्स सारे!

अत: हमारे द्वारा विकारी संबंध स्थापित नहीं हुए हैं। विकारी संबंध के अलावा बाकी सब हुआ है। हमें ऐसा मिथ्याभिमान था कि हमारे द्वारा 'विकारी संबंध नहीं होने चाहिए'। कुल के अभिमान की वजह से बहुत संभाला कि 'हमसे ऐसा नहीं होना चाहिए'।

अत: चरित्र की खराबी के अलावा बाकी सभी तरह की खराबियाँ हुई हैं लेकिन चरित्र खराब नहीं हुआ। चरित्र सही रहा। चरित्र भ्रष्ट नहीं हुआ।

प्रश्नकर्ता : चरित्र भ्रष्ट अर्थात् कभी मानसिक विकार हुआ था?

दादाश्री : हाँ, शायद कभी मानसिक विकार हुआ हो, उसका भी उपाय कर दिया था फिर। जैसे कि अगर कपड़े पर दाग़ लग जाए तो उसे साबुन से धो देते हैं न! वैसा ही उपाय मेरे पास था। साबुन से धो देते हैं या नहीं? जिनके पास हो, वे?

प्रश्नकर्ता : ठीक है, तो आपने क्या उपाय किया?

दादाश्री : वह उपाय तो अभी बताने जैसा नहीं है। वह सारा तो आध्यात्मिक उपाय है। वह स्थूल उपाय नहीं है। वे जो भूलें हुईं वे स्थूल हैं लेकिन उनका उपाय आध्यात्मिक है।

रक्षण करने से बढ़ती है भूलों की आयु

भूल हुई हो, पर उसकी आयु किस तरह बढ़ती है, वह मैं जानता था इसलिए क्या करता था? सभी बैठे हों और कोई एक जना आकर कहे, 'बड़े ज्ञानी बनकर बैठे हैं, हुक्का तो छूटता नहीं।' ऐसा सब बोले न, तब मैं कहूँ कि, 'महाराज, यह इतनी हमारी खुली कमज़ोरी है, वह मैं जानता हूँ। आपने तो आज जाना, मैं तो पहले से ही जानता हूँ।' यदि मैं ऐसा कहूँ कि 'हम ज्ञानियों को कुछ नहीं छूता,' तो वह हुक्का अंदर समझ जाएगा कि यहाँ अपनी आयु बीस साल बढ़ गई! क्योंकि मालिक अच्छे हैं। कुछ भी करके रक्षण करते हैं। मैं वैसा कच्चा नहीं हूँ। रक्षण कभी भी नहीं किया। लोग रक्षण करते हैं या नहीं करते?

प्रश्नकर्ता : हाँ करते हैं, बहुत ज़ोर-दार करते हैं।

दादाश्री : एक साहब नसवार सूँघते थे, ऐसे करके! मैंने कहा, 'साहब, क्या यह नसवार ज़रूरी है आपके लिए?' तब उन्होंने कहा, 'नसवार में कोई हर्ज नहीं है।' मुझे हुआ, 'इन साहब को मालूम ही नहीं है कि अंदर से इस नसवार की आयु बढ़ा रहे हैं!' क्योंकि आयु क्या है? कोई भी संयोग जो है, उसका वियोग का तय होने के बाद ही संयोग मिलता है। यह तो जो नक्की हो चुका है, फिर उसकी आयु बढ़ाते हैं ऐसे! क्योंकि जीवित मनुष्य, चाहे उतना कम-ज़्यादा करवाए इसलिए क्या हो फिर? ये सभी आयु बढ़ा रहे हैं, हर एक बात में उसका रक्षण करते हैं कि, 'कोई हर्ज नहीं, हमें तो छूता ही नहीं।' गलत चीज़ का रक्षण करना तो भयंकर गुनाह है।

जो भूलें खत्म करें वे परमात्मा

अपने में क्रोध-मान-माया और लोभ के जो कषाय हैं, वे उधार चढ़ाए बगैर रहते ही नहीं

इसलिए उनके सामने जमा कर लेना चाहिए। अपनी भूल हुई हो, तब उधार हो जाता है लेकिन तुरंत ही केश-नक़द प्रतिक्रमण कर लेना चाहिए। अपने प्रति किसी से अतिक्रमण हो जाए, तो हमें जमा कर लेना चाहिए और भविष्य के लिए उधार नहीं रखना चाहिए। यदि किसी के प्रति अपने से भूल हो तो जाए, तब भी हमें आलोचना-प्रतिक्रमण व प्रत्याख्यान कर लेना चाहिए। मन-वचन व काया से, प्रत्यक्ष दादा भगवान की साक्षी में क्षमा माँगते रहना। कदम-कदम पर जागृति रहनी चाहिए। अपने में क्रोध-मान-माया-लोभ के कषाय तो ऐसा माल है; जो भूलें करवाकर उधारी करवाएँ। वे भूलें करवाते ही हैं और उधारी खड़ी करते हैं लेकिन उसके सामने हमें तुरंत ही, तत्क्षण माफी माँगकर जमा करके साफ कर लेना चाहिए। यह व्यापार पैन्डिग नहीं रखना चाहिए। इसे तो दरअसल नक़द व्यापार कहते हैं।

प्रश्नकर्ता : अभी जो भूलें हो रही हैं, वे पिछले जन्म की हैं न?

दादाश्री : पिछले जन्म के पापों को लेकर ही ये भूलें हैं लेकिन वापस इस जन्म में भूलें मिटती ही नहीं और भूलें बढ़ाता जाता है। भूलों को मिटाने के लिए भूल को भूल कहना पड़ता है। उनका रक्षण नहीं करना चाहिए। 'इसे' 'ज्ञानी पुरुष' की चाबी कहते हैं। इससे कैसा भी ताला खुल जाता है।

जिसे खुद की एक भी भूल मिल जाए, भगवान ने उसे इंसान कहा है। जिस भूल की वजह से घोर जंगल में भटक रहा है और यदि उसे उस भूल का पता चल जाए, तो वह मानव है। जो मानव उसे उसकी वह भूल बता दे, उसे भगवान ने 'अति मानव' (सुपर ह्यूमन) कहा है। इस जगत् में सबकुछ पता चल सकता है लेकिन खुद की भूल का पता नहीं चल पाता।

जिसने एक बार नक्की किया हो कि मुझमें जो भूलें रही हों उसे मिटा देनी है, वह परमात्मा हो सकता है! हम अपनी भूलों से बंधे हैं। भूल मिटे तब तो परमात्मा ही हैं! जिसकी एक भी भूल नहीं, वह खुद ही परमात्मा है। यह भूल क्या कहती है? 'तू मुझे जान, मुझे पहचान।' यह तो ऐसा है कि भूल को खुद का अच्छा गुण मानते थे। भूल का स्वभाव कैसा है कि वह हमारे ऊपर शासन चलाती है। पर भूल को भूल जाना तो वह भाग जाती है। फिर खड़ी नहीं रहती। जाने लगती है। पर यह तो क्या करते हैं कि एक तो भूल को भूल जानते नहीं हैं और ऊपर से उसका पक्ष लेता है मतलब भूल को घर में ही भोजन करवाते हैं।

स्व-दोष दिखने लगें, तभी से बावा जाने लगता है

मंगलदास का रक्षण करने से हम बावा ही रहेंगे और बावा का रक्षण करेंगे तो हम वापस मंगलदास ही बनेंगे। उसका जो हिसाब है वह उसे मिलता ही रहेगा, हमें देखते रहना है। क्या हो रहा है, उसे देखो, वही अपना मार्ग है।

और जब खुद को खुद की भूल दिखाई देगी तब डिसिज़न आ जाएगा। बावा अब बहुत समय तक नहीं रहेगा। अब बहुत समय तक बावा के रूप में नहीं रहेगा। अब भगवान बन जाएगा। खुद अपनी भूलें देखे तभी से भगवान बनने की तैयारी होने लगती है।

स्व-दोष देखते ही पाया महावीर का मार्ग

चंदूभाई में जो-जो दोष हैं वे सब दिखाई देंगे। यदि दोष नहीं दिखाई दें तो यह ज्ञान किस काम का? इसलिए कृपालुदेव ने क्या कहा था?

''हुँ तो दोष अनंतनुं, भाजन छुं करुणाळ,
दीठा नहीं निज दोष, तो तरीये कोण उपाय?''

खुद के दोष दिखाई देने चाहिए। दोष हैं, उसमें हर्ज नहीं है। किसी में पच्चीस होते हैं, किसी में सौ होते हैं, हम में दो हैं। उसकी कोई कीमत नहीं है। उपयोग ही रखना है। उपयोग रखा तो दोष दिखाई ही देते रहेंगे और कुछ नहीं करना है।

जब से दोष दिखाई देने लगें न, तब कहा जाएगा कि कृपालुदेव के धर्म को समझा कहा जाएगा। आज जो खुद के दोष दिखाई देते हैं, वे कल नहीं दिखें, कल नयी तरह के दिखें, परसों उनसे भी नई तरह के दिखें, तब हम समझेंगे कि इसे कृपालुदेव का धर्म समझ में आया है और यह कृपालुदेव के धर्म का पालन करता है। जब तक खुद के दोष नहीं दिखाई दें, तब तक कुछ भी नहीं समझा है।

क्रमिक मार्ग में तो कभी भी खुद के दोष दिखाई ही नहीं देते। 'दोष तो अनेक हैं, पर हमें दिखाई नहीं देते।' यदि ऐसा कहे तब मैं मानूँगा कि तू मोक्ष का अधिकारी है। पर जो ऐसा कहे कि 'मुझमें दो-चार ही दिखाई देते हैं, वह अनंत दोषों से भरा हुआ है और कहता है कि दो-चार ही दिखाई देते हैं। मतलब, तुझे दो-चार दोष ही दिखाई देते हैं, इसलिए क्या तू ऐसा मानता है कि इतने ही दोष हैं?

ऐसा कब कहा जाएगा कि महावीर भगवान के मार्ग को प्राप्त कर लिया? जब रोज़ खुद के सौ-सौ दोष दिखाई दें, रोज़ सौ-सौ प्रतिक्रमण होने लगें, उसके बाद कहा जाएगा कि महावीर भगवान के मार्ग में आया है। अभी उसके बाद 'स्वरूप का ज्ञान' तो कितना ही दूर है। यह तो चार पुस्तकें पढ़कर 'स्वरूप' पाने का कैफ लिए घूमता है। इसे तो 'स्वरूप' का एक छींटा पाया, ऐसा भी नहीं कहेंगे।

दोष दिखते रहें वही कमाई

प्रश्नकर्ता : दोष अधिक दिखाई दें, उसके लिए जागृति किस तरह आती है?

दादाश्री : भीतर जागृति तो बहुत है लेकिन दोषों को ढूँढने की भावना नहीं हुई है। पुलिस वाले को जब चोर खोजने की इच्छा हो तब चोर मिल जाता है। यदि पुलिस वाला कहे कि, 'चोर पकड़ने नहीं जाना है, उसे तो जब वह आएगा तब पकड़ेंगे।' तब फिर चोर मज़े करेगा ही न! ये भूलें तो छुपकर बैठी हैं। उन्हें ढूँढें तो तुरंत ही पकड़ में आती जाती हैं।

सारी कमाई का फल क्या है? आपको एक के बाद एक अपने दोष दिखाई दें तभी कहा जाएगा कि कमाई की। यह सारा ही सत्संग इसीलिए है कि 'खुद को' खुद के सभी दोष दिखाई दें। खुद के दोष दिखाई देंगे, तभी वे दोष जाएँगे। दोष कब दिखाई देंगे? जब खुद 'स्वयं' हो जाएगा, 'स्व-स्वरूप' हो जाएगा, तब। जिसे खुद के दोष ज़्यादा दिखाई दें, वह बड़ा है।

भगवान महावीर के सिद्धांत

भगवान महावीर का पूरा सिद्धांत प्रतिक्रमण पर ही आधारित है। आलोचना-प्रतिक्रमण व प्रत्याख्यान! जहाँ आलोचना-प्रतिक्रमण व प्रत्याख्यान नहीं हैं, वहाँ धर्म ही नहीं है। अब, आलोचना-प्रतिक्रमण व प्रत्याख्यान जगत् के लोगों को याद नहीं रहते। आप शुद्धात्मा बन गए हो इसलिए आपको तुरंत याद आ जाता है!

यह शासन हमारा नहीं माना जाएगा। हम तो शासन के शृंगार कहलाते हैं। महावीर शासन के शृंगार! हं! हमें उस शासन का क्या करना है? यह पीड़ा हम क्यों मोल लें? यह तो भगवान महावीर का शासन कहलाता है। यह तीर्थंकर को शोभा

देता है, हमें शोभा नहीं देता। इसमें हम तो बीच में पुष्टि देने वाले हैं।

यह सिर्फ इतना ही है कि हमारा अक्रम ज्ञान, यह वही विज्ञान है। लेकिन यह गली-कूचों वाला है। लोग अभी गली-कूचों में घुस गए हैं। वह भी सिर्फ आड़ी गली में ही नहीं, लेकिन आड़ी में, फिर सीधी और सीधी में फिर तिरछी। दुबारा फिर मिलता ही नहीं! अब वहाँ पर ज्ञान पहुँचाना यानी कि बहुत सरल नहीं है।

यह भगवान का ज्ञान, कितना स्ट्रेट फॉरवर्ड (सीधा और सरल) है! यह स्ट्रेट लाइन और वह स्ट्रेट लाइन। नोर्थ, नोर्थ-वेस्ट, साउथ-वेस्ट, ऐसा सबकुछ लेकिन एक्ज़ेक्ट फिगर वाला! जबकि अभी तो कैसा है कि किसी गली के अंदर गली और उसके अंदर गली! और गोल चक्कर लगाकर फिर वापस उधर ही आ जाते हैं! इसलिए यह अक्रम ज्ञान आया।

निष्पक्षपाती होने पर दिखाई देती हैं भूलें

यानी भूलें दिखाई देने लगीं हैं न, वे जितनी दिखाई देंगी, उतनी चली जाएँगी।

आपको थोड़ी भूलें दिखाई देती हैं? प्रतिदिन पाँच-दस दिखती जाती हैं न? वे दिखीं, उतना ही ज़्यादा दिखता जाएगा। अभी तो बहुत दिखेंगी। जैसे-जैसे दिखती जाएगी, वैसे-वैसे आवरण खुलते जाएँगे और वैसे-वैसे ज़्यादा दिखाई देगी।

कुछ दोष बंद नहीं हो सकते। वह तो मार खाने पर ही अनुभव होगा, तब दोष बंद होंगे। मैं जानता हूँ कि ये बिना अनुभव के बंद नहीं होंगे। बंद करवाने जाएँ तो वह गलत है।

जितना करना हो, उतना हो सकता है। कुछ महात्मा वैसा करते हैं। पुरुषार्थ है, पर वह सभी लोगों को नहीं आता। हमारे यहाँ जो सामायिक करवाते हैं न, वह बड़ा पुरुषार्थ है। भूल का स्वभाव कैसा है कि भूल दिखी कि भूल जाने की तैयारी कर लेती है। भूल खड़ी नहीं रहती। दोष हो जाए तो उसमें हर्ज नहीं है, पर दोष दिखाई देना चाहिए। दोष होता है, उसका दंड नहीं है लेकिन भूलें दिखाई देती हैं उसके लिए इनाम मिलता है। किसी को खुद की भूलें दिखाई ही नहीं देतीं। आत्मा प्राप्त होने के बाद निष्पक्षपाती होता है इसलिए भूलें दिखाई देने की शुरुआत होती है।

जब संपूर्ण निष्पक्षपातीपन आए, इस देह के लिए, वाणी के लिए, वर्तन के लिए संपूर्ण निष्पक्षपातीपन उत्पन्न होता है तभी खुद, खुद के सभी दोष देख सकता है। यह ज्ञान देने के बाद आप निष्पक्षपाती हुए इसलिए देह का पक्षपात आपको पड़ौसी जितना रहा है। इसलिए जो भूल होती है, वह दिखती रहती है। दिखाई दीं इसलिए जाने लगती है।

खुद के दोष दिखाई दें तभी से समकित

खुद का दोष दिखने लगें, तब से उसे समकित होना कहते हैं। खुद का दोष दिखने लगें तब से समझना कि खुद जागृत हुआ है। नहीं तो सब नींद में ही चल रहा है। दोष खत्म हुए या नहीं हुए, उसकी बहुत चिंता करने जैसी नहीं है लेकिन मुख्यत: जागृति की ज़रूरत है। जागृति होने के बाद फिर नये दोष खड़े नहीं होते हैं और पुराने दोष जो होते हैं, वे निकलते रहते हैं। हमें उन दोषों को देखना है कि दोष किस से होते हैं!

जितने दोष दिखाई देंगे, उतने विदाई लेने लगेंगे। जो गाढ़ हैं, वे दो दिन, तीन दिन, पाँच दिन, महीने या साल में भी वे दिखाई देंगे तो फिर जाने ही लगेंगे, अरे! भागने ही लगेंगे। घर में यदि चोर घुस जाए तो वह कब तक बैठा रहता है? जब तक मालिक को पता नहीं चले, तब तक। मालिक को यदि पता चल जाए तो तुरंत ही चोर

भागने लगेगा। अभी भी सूक्ष्म तक तो पहुँचे ही नहीं हैं। यह सब तो अभी स्थूल में है।

दादा के जीवन की घटनाओं की खासियत

प्रश्नकर्ता : ठीक है दादा, लेकिन आपके जीवन की घटनाओं के जो उदाहरण दिए हैं, उन्हें यदि परमार्थ में ले जाएँ तो हमारा कल्याण हो जाएगा! आपके पास कोई लौकिक बातें नहीं हैं।

दादाश्री : ठीक है। यदि लौकिक समझ हो न, तब भी बहुत हो गया, घर में शांति हो जाएगी। बिना बात का टकारव तो उसी वजह से होता है!

प्रश्नकर्ता : आप ऐसे दूसरे अनुभव बताइए न।

दादाश्री : बहुत अनुभव हुए हैं, कितने बताऊँ आपको?

प्रश्नकर्ता : जितना भी याद आए।

दादाश्री : वह तो, जब यहाँ पर बात निकले तभी सही। यह तो टेपरिकॉर्डर है, जब निकले तब निकले, नहीं तो नहीं निकलती।

प्रश्नकर्ता : निकलती हैं तो निकलने दीजिए। सुनकर सभी को आनंद होता है!

दादाश्री : हाँ, आनंद तो होगा न! लेकिन इसमें ऐसा है न, कि यह जागृति आनी चाहिए। इसमें गड़बड़ कैसे चलेगी?

प्रश्नकर्ता : अन्य सभी उपदेशों के बजाय तो ये अनुभव की बातें बहुत ही उपयोगी हैं।

दादाश्री : इसीलिए हमारी पुस्तकों में, हमारी जो आप्तवाणियाँ हैं न, उनमें हमारे सभी जीवन की घटनाएँ आती हैं न! तब लोग कहते हैं, 'अब हम इन घटनाओं से ही समझकर बहुत आगे बढ़ गए हैं।'

प्रश्नकर्ता : फिट हो जाता है न!

दादाश्री : हाँ, फिट हो जाता है!

प्रत्यक्ष ज्ञानी से पूछने पर ही प्रगति

प्रश्नकर्ता : आप कई बार कहते हैं कि हमारी हाज़िरी में प्रत्यक्ष कर लो।

दादाश्री : हम वही कहते हैं न कि हमारी हाज़िरी में प्रत्यक्ष यानी कि आपको अपना जो अनुभव हुआ है, आपका वह अनुभव उलझा रहा हो तो हमारे अनुभव से पूछ लो ताकि आपके अनुभव की उलझनें निकल जाएँ। वह अनुभव आपको फिट हो जाएगा। बस, वही कर लेना है। हमारे पास अनुभव का स्टॉक है। अब आपको अनुभव होने लगे हैं, यह सच है या वह सच है, ऐसा पूछ लिया तो निबेड़ा आ गया।

प्रश्नकर्ता : बस, यानी कि जो कुछ भी उलझन हो रही हो या जो कुछ भी हो रहा हो तो वह आप से पूछकर फिर उसका *निकाल* (निपटारा) ला देना है!

दादाश्री : हाँ, उसे रात में पूछ लो, दिन में पूछ लो, एट एनी टाइम पूछ लो। ऐसा कुछ नहीं है भाई, कि तीन बजे ही पूछना है। यह मुहूर्त वाली चीज़ नहीं है। मुहूर्त वाली चीज़ तो बाहर, यहाँ तो रात के ग्यारह बजे आकर भी उलझन का सारा हल पूछा जा सकता है!

यह जो रास्ता मैंने आपको बताया है, वही रास्ता है। जिस रास्ते से मैं आया हूँ, वही रास्ता मैंने आपको दिया है। मेरे अनुभव का ही रास्ता दिया है। शास्त्र में कहीं भी यह अनुभव का रास्ता नहीं है। एक भी शब्द शास्त्र में ऐसा नहीं है जो कि अनुभव का रास्ता हो और इस काल के लोगों को वह काम में आए!

– **जय सच्चिदानंद**

दादाई जगकल्याण मिशन - सत्संग हाइलाईट्स

18-20 मई : इस साल सूरत में सत्संग कार्यक्रम इनडोर स्टेडियम में आयोजित हुआ। स्टेडियम महात्मा व मुमुक्षुओं से भर गया था। पहले दिन लगभग चार हज़ार महात्मा व मुमुक्षुओं ने संत्संग का लाभ उठाया। सत्संग व ज्ञानविधि में मुमुक्षुओं ने बड़ी संख्या में हिस्सा लिया। पहले दिन के सत्संग में महात्माओं ने पूज्यश्री से आत्मा व व्यवहारिक ज्ञान से संबंधित प्रश्नों के समाधान प्राप्त किए। 19 तारीख को ज्ञानविधि में 1725 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। ज्ञानविधि के दूसरे दिन आप्तपुत्र के फॉलोअप सत्संग का आयोजन हुआ।

20-22 मई : गुजरात के प्रसिद्ध हिल स्टेशन सापुतारा में बड़ौदा, भरूच, अंकलेश्वर, दाहोद, आणंद, नडियाद, खेड़ा, साबरकांठा और अरवल्ली जिले के महात्माओं के लिए ज़ोनल शिविर का आयोजन हुआ। जिसमें 1150 महात्माओं ने भाग लिया। पूज्यश्री द्वारा 'दखल के सामने पुरुषार्थ' और 'आंतरिक संयम से प्राप्त कर सकते हैं पूर्णता' टॉपिक पर विशेष सत्संग हुए। पूज्यश्री के साथ बोट, गरबा, दादा दरबार, मोर्निंग वॉक वगैरह कार्यक्रमों का आयोजन हुआ। GNC के बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया।

23-25 मई : पूज्यश्री के सानिध्य में सापुतारा में ही सूरत, नवसारी, वलसाड़ और वापी जिलों के महात्माओं की ज़ोनल शिविर का आयोजन हुआ। जिसमें लगभग 1850 महात्माओं ने हिस्सा लिया। स्पेशल टॉपिक, 'प्रकृति से यों जुदा रह सकते हैं' व 'निर्ग्रंथ हुआ जा सकता है सामायिक व प्रतिक्रमण से', पर पूज्यश्री के सत्संग हुए। महात्माओं ने प्रकृति की कमियाँ तथा सामायिक व प्रतिक्रमण से संबंधित खुद को उलझाने वाले प्रश्नों का पूज्यश्री से निराकरण प्राप्त किया। पूज्यश्री के साथ गार्डन में इन्फॉर्मल सेशन, बोट गरबा, मोर्निंग वॉक व सांस्कृतिक कार्यक्रमों में हास्य डायरा, GNC के बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम और व्यक्तिगत मार्गदर्शन प्राप्ति के लिए दादा दरबार जैसे कार्यक्रमों का आयोजन हुआ।

27-29 मई : बड़ौदा में तीन दिवसीय सत्संग व ज्ञानविधि का कार्यक्रम का आयोजन हुआ। पहले दिन 2500 से ज़्यादा महात्मा व मुमुक्षुओं ने प्रश्नोत्तरी सत्संग कार्यक्रम में हिस्सा लिया। दूसरे दिन आयोजित ज्ञानविधि में 900 से ज़्यादा मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। 29 तारीख को हुए फॉलोअप सत्संग में कई ज्ञान प्राप्त महात्माओं ने पाँच आज्ञा के बारे में अधिक समझ प्राप्त करने के लिए हिस्सा लिया।

5-9 जून : अडालज त्रिमंदिर संकुल में पाँच दिवसीय PMHT शिविर का आयोजन हुआ। जिसमें 5660 से भी ज़्यादा महात्माओं ने भाग लिया। पहले दिन 'पति-पत्नी का दिव्य व्यवहार' पुस्तक पर पारायण व 'अपेक्षा से टकराव' टॉपिक पर विशेष सत्संग हुए। दूसरे दिन सवेरे युवाँ महात्माओं द्वारा ड्रामा, 'मंगलफेरा' प्रस्तुत किया गया। व्यू पोइन्ट डिफरेन्स की वजह से पति-पत्नी किस तरह एक-दूसरे को समझ नहीं पाते उसकी इसमें हूबहू प्रस्तुति हुई। उस दिन शाम को 'माँ-बाप बच्चों का व्यवहार' ग्रंथ पर वाचन और पारायण हुआ। तीसरे दिन 'माँ-बाप बनो लेकिन माँ-बाप पना मत करो' टॉपिक पर विशेष सत्संग और प्रश्नोत्तरी हुए। रात को अंबा स्कुल और सेक्टर-4 में फैमिली बोन्डिंग के लिए विविध एक्टिविटी रखी गई जिसका महात्माओं के परिवारों ने आनंद उठाया। अंतिम दो दिनों में 'पैसों का व्यवहार' ग्रंथ पर वाचन व पारायण और 'लक्ष्मी कितनी और कब तक ज़रूरी है' टॉपिक पर विशेष सत्संग हुए। इसके अलावा आप्तपुत्र व आप्तपुत्रियों द्वारा ग्रुप सत्संग, व्यक्तिगत मार्गदर्शन व जनरल सत्संग भी हुए। टॉपिक पर आधारित DVD सत्संग व सामायिक भी रखी गई। रोज़मर्रा के जीवन में कदम-कदम पर काम में आने वाली ज्ञान की चाबियाँ देने वाला PMHT शिविर महात्माओं में प्रिय होता जा रहा है। शिविर के अंत में ऐसे महात्मा जिनके बच्चे नहीं हैं, उनके लिए एक नए ग्रुप, DMHT की शुरुआत की गई।

आत्मज्ञानी पूज्य नीरू माँ और पूज्य दीपकभाई के आशीर्वाद प्राप्त आप्तपुत्रों के सत्संग कार्यक्रम

अहमदनगर **दिनांक : 10 अगस्त** **समय :** शाम 5 से 7-30 **संपर्क :** 9422225475
स्थल : होटल राज पैलेस, पुणे स्टैंड के सामने, तिलक रोड, अहमदनगर.

शिरडी **दिनांक : 11 अगस्त** **समय :** सुबह 9-30 से 12 **संपर्क :** 9422145368
स्थल : जैन स्थानक, श्री द्वारकामाई मंदिर के पास, श्री साईं समाधी मंदिर के पास, शिरडी.

औरंगाबाद **दिनांक : 11 अगस्त** **समय :** शाम 5 से 8 **संपर्क :** 8308008897
स्थल : एशोमंगल कार्यालय, पन्नालाल नगर, उस्मानपूरा, औरंगाबाद.

जलगांव **दिनांक : 12 अगस्त** **समय :** शाम 4-30 से 7-30 **संपर्क :** 9420942944
स्थल : ओमकार हॉल, डी.एस.पी. चौक, HDFC बँक के पास, माहाबल रोड, जलगांव.

धुले **दिनांक : 13 अगस्त** **समय :** शाम 5 से 8 **संपर्क :** 9422759201
स्थल : तेरापंथी हॉल, कुमार नगर, साकरी रोड, धुले.

नासिक **दिनांक : 14 अगस्त** **समय :** शाम 4 से 7 **संपर्क :** 9021232111
स्थल : आर.पी. विद्यालय, निमाणी बस स्टैंड के पास, पंचवटी, नासिक.

घोटी **दिनांक : 15 अगस्त** **समय :** दोपहर 3 से 6 **संपर्क :** 9822287325
स्थल : घर नंबर 3466, धांडे हॉस्पिटल के पास, बस स्टैंड के सामने, घोटी.

सातारा **दिनांक : 7 सितम्बर** **समय :** सुबह 10 से 12-30 **संपर्क :** 7722051313
स्थल : आदर्श अपार्टमेंट, 929 शनिवार पेठ, भावे सुपारी जवळ, सातारा.

सातारा **दिनांक : 7 सितम्बर** **समय :** शाम 5-30 से 7-30 **संपर्क :** 7722051313
स्थल : प्लाट नं 176 क/2ब कारंजे तुर्फ, रामकुंड, बेगर होम जवळ, सातारा.

कराड **दिनांक : 8 सितम्बर** **समय :** सुबह 9-30 से 12-30 **संपर्क :** 7588683603
स्थल : मंगळवार पेठ, नगरपालिका शाळा न 9, जोतिबा मंदिरा जवळ, कराड.

कोल्हापूर **दिनांक : 8 सितम्बर** **समय :** शाम 6 से 8-30 **संपर्क :** 7972026385
स्थल : श्री स्वामी समर्थ मंदिर, प्रद्यापुरी, रुईकर कॉलोनी, कोल्हापूर.

कोल्हापूर **दिनांक : 9 सितम्बर** **समय :** सुबह 9-30 से 12-30 **संपर्क :** 9403787776
स्थल : श्री राधा कृष्ण मंदिर, दूसरी गली, शाहूपुरी, कोल्हापुर.

इचलकरंजी **दिनांक : 9 सितम्बर** **समय :** शाम 4-30 से 7 **संपर्क :** 9762407419
स्थल : महेश क्लब, राधाकृष्ण सिनेमा के पास, इचलकरंजी.

सांगली **दिनांक : 10 सितम्बर** **समय :** दोपहर 3 से 6 **संपर्क :** 9423870798
स्थल : सिद्धराज एंटरप्राइज, कुची रोड, कवठे, महाकाल.

सोलापुर **दिनांक : 11 सितम्बर** **समय :** शाम 4 से 7 **संपर्क :** 9284188494
स्थल : गुजराती भवन (गुजराती मित्र मंडल), पुरानी पोलिस लाइन, मुरारजी पेठ, सोलापुर.

बारामती **दिनांक : 12 सितम्बर** **समय :** शाम 4 से 6 **संपर्क :** 9766680152
स्थल : के.एस.सर फार्म हाउस; पोस्ट-काहाटी, बारामती.

त्रिमंदिरो के संपर्क : अडालज : (079) 39830100, **राजकोट :** 9924343478, **भूज :** 9924345588, **गोधरा :** 9723707738, **अंजार :** 9924346622, **मोरबी :** (02822)297097, **सुरेन्द्रनगर :** 9737048322, **अमरेली :** 9924344460, **वडोदरा:** 9574001557, **जामनगर :** 9924343687 **अन्य सेन्टरों के संपर्क : अहमदाबाद:** (079) 27540408, **मुंबई:** 9323528901, **वडोदरा (दादा मंदिर) :** 9924343335, **दिल्ली:** 9810098564, **बैंगलूर:** 9590979099, **कोलकता:** 9830080820
यु.एस.ए.-केनेडा: +1 877-505-DADA (3232), **यु.के.:** +44 330-111-DADA (3232), **ऑस्ट्रेलिया:** +61 421127947

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सानिध्य में आगामी सत्संग कार्यक्रम

अडालज त्रिमंदिर

17 अगस्त (शनि) शाम 4 से 7 - **सत्संग** तथा **18 अगस्त** (रवि) सुबह 10 से 12 - **आप्तपुत्र सत्संग**
18 अगस्त (रवि) शाम 4 से 7-30 - **ज्ञानविधि**
24 अगस्त (शनि) - रात 10 से 12 - **जन्माष्टमी के अवसर पर विशेष भक्ति कार्यक्रम**
25 अगस्त (रवि) सुबह 11 बजे से **पूज्यश्री के दर्शन का कार्यक्रम**
26 अगस्त से 2 सितम्बर (सोम से सोम) **पर्युषण पर्व- आप्तवाणी 14 (भाग-1) पर सत्संग पारायण**

दिल्ली

13-14 सितम्बर (शुक्र-शनि) शाम 5-30 से 8-30 - **सत्संग** तथा **15 सितम्बर** (रवि) शाम 5 से 8-30 - **ज्ञानविधि**
स्थल : तालकटोरा इन्डोर स्टेडियम, नई दिल्ली. **संपर्क :** 9999533946, 9810098564

बंगलौर

17 सितम्बर (मंगल) शाम 5-30 से 8-30 - **सत्संग** तथा **18 सितम्बर** (बुध) शाम 5-30 से 9 - **ज्ञानविधि**
19 सितम्बर (गुरु) शाम 5-30 से 8-30 - **आप्तपुत्र सत्संग**
स्थल : बेंगलोर पाटीदार समाज, पीन्या, 8 हेसरघाट्टा मेईन रोड, बागलकुंटे. **संपर्क :** 9590979099

पूणे

20-21 सितम्बर (शुक्र-शनि) शाम 5-30 से 8-30 - **सत्संग** तथा **22 सितम्बर** (रवि) शाम 5 से 8-30 - **ज्ञानविधि**
स्थल : गणेश कला क्रिडा मंच, नेहरु स्टेडियम के पास, स्वारगेट बस स्टेशन. **संपर्क :** 7218473468
23 सितम्बर (सोम) शाम 5-30 से 8 - **आप्तपुत्र सत्संग** (स्थल की घोषणा बाकी)

दादाश्री का 112 वाँ जन्म जयंती तथा मुंबई त्रिमंदिर का प्राणप्रतिष्ठा महोत्सव

7 से 12 नवम्बर 2019

अधिक जानकारी अगले अंको में प्रकाशित की जाएगी।

भारत में पूज्य नीरूमाँ / पूज्य दीपकभाई को देखिए टी.वी. चैनल पर...

भारत
- **'दूरदर्शन'-नेशनल** पर सोम से शनि सुबह 8-30 से 9, रवि सुबह 6-30 से 7
- **'दूरदर्शन'-मध्यप्रदेश** पर सोम से शनि दोपहर 3-30 से 4, रवि शाम 6 से 6-30 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन'-बिहार** पर हर रोज़ शाम 6-30 से 7 तथा सुबह 7 से 7-30 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन'-उत्तरप्रदेश** पर शनि से बुध रात 9-30 से 10 (हिन्दी में)
- **'उड़ीसा प्लस' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 7-30 से 8 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन'-सह्याद्रि** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 (मराठी में)
- **'दूरदर्शन'-चंदना** पर सोम और शुक्र रात 7-30 से 8 (कन्नड़ में)
- **'दूरदर्शन' गुजरात - गिरनार** पर सोम से शनि दोपहर 3-30 से 4 (गुजराती में)
- **'दूरदर्शन'-गिरनार** हर रोज़ पर सुबह 9 से 9-30 तथा हर रोज़ रात 10 से 10-30 (गुजराती में)
- **'अरिहंत'** पर हर रोज़ सुबह 3-30 से 4-30, दोपहर 2-30 से 3 तथा रात 8 से 9 (गुजराती में)

USA-Canada
- **'Rishtey-USA'** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 तथा 8 से 8-30 (हिन्दी में) EST
- **'TV Asia'** पर हर रोज, सुबह 7-30 से 8 EST (गुजराती में)

UK
- **'वीनस' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 8 से 8-30 (हिन्दी में)
- **'Rishtey-UK'** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 Western European Time (6am-6-30am GMT)
- **'वीनस' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 8-30 से 9 (गुजराती में)

CAN-Fiji-NZ-Sing.-SA-UAE - **Rishtey-Asia'** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 तथा 8 से 8-30 (हिन्दी में) EST
USA-UK-Africa-Aus. - **'आस्था'** (डीश टीवी चेनल 849-युके, 719-युएसए) पर सोम से शुक्र रात 10 से 10-30

जुलाई 2019
वर्ष-14 अंक-9
अखंड क्रमांक - 165

दादावाणी

Date Of Publication On 15th Of Every Month
RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. G-GNR-348/2018-2020
Valid up to 31-12-2020
LPWP Licence No. PMG/HQ/36/2018-2020
Valid up to 31-12-2020
Posted at SRO Gandhinagar
on 15th of every month.

अक्रम विज्ञान के प्रताप से दिखाई देते हैं निजदोष

सारा दोष खुद का ही है, किसी और का दोष है ही नहीं। दुनिया में किसी का दोष नहीं है। यानी कि पूरा जगत् निर्दोष है। खुद के दोषों से ही यह सब उत्पन्न हुआ है इसलिए उन दोषों को धो दो। हम क्या कहते हैं कि प्रतिक्रमण करो। किसी का दोष देखने से ही तो यह संसार खड़ा हुआ है और यदि खुद के दोष देखेगा तो फिर मोक्ष में जाएगा। वह तो ज्ञान के प्रताप से, अक्रम विज्ञान के प्रताप से खुद के दोष दिखाई देते हैं वर्ना एक भी दोष दिखाई न दे। यह मार्ग बिल्कुल अलग है। एक दिन भी बहीखाता साफ हुए बगैर नहीं रहता, ऐसा मार्ग है। शाम को प्रतिक्रमण करके सब बहीखाते साफ कर ही देता है। इस दुनिया में कोई दोषित नहीं दिखाई देता, सब निर्दोष दिखाई देते हैं।

- दादाश्री

Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation - Owner. Printed at Amba Offset, B - 99, GIDC, Sector - 25, Gandhinagar - 382025.